हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार 24 मई 2026

तापमान

अधिकतम 43 .2 डिग्री
न्यूनतम 26 .5 डिग्री

11 खरखड़ा को जड़थल सब डिविजन में जोड़ने से ग्रामीणों में रोष, आंदोलन की दी चेतावनी

12 सीएम फ्लाइंग की जींस धोने की यूनिट में रेड, जोहड़ में छोड़ा जा रहा था कैमिकल युक्त पानी

नप की ओर से शहर में खत्म किए गए थे अनावश्यक कचरा प्वाइंट, अब डस्टबिनों के पास नए हो रहे तैयार

ऐसे कैसे बनेगा शहर स्वच्छ: सड़कों पर डस्टबिन से बिखर रहा कचरा, नगर परिषद में सीवर ओवरफ्लो, पाकों में सफाई नहीं

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

शहर की सफाई व्यवस्था सुधरने का नाम नहीं ले रही है। सड़कों पर जगह-जगह कचरे के ढेर लगे हुए है वही बाजार, पार्क व मुख्य मार्गों पर रखे गए डस्टबिनों को खाली नहीं किया जा रहा है। लोगों की ओर से डाला गया कचरा डस्टबिनों में कम और सड़क पर ज्यादा नजर आ रहा है। सफाई व्यवस्था खराब होने के कारण शहर इस बार भी स्वच्छता रैंकिंग में पिछड़ने की कगार पर है। यहीं हाल शौचालयों का है। कचरा उठान व डोर-टू-डोर कचरा का करोड़ों का ठेका देने के बाद भी शहर की सफाई व्यवस्था बिगड़ती जा रही है। सरकुलर रोड पर ही कई अनावश्यक कचरा प्वाइंट व डंपिंग यार्ड खत्म कर दिए गए है, फिर भी कचरा सड़क पर फैल रहा है। शहर की सड़कों पर रखे गए प्लास्टिक के डस्टबिनों के पास ही कचरा प्वाइंट बन गए है। नगर परिषद की ओर से शहर में 200 से अधिक डस्टबिन पार्कों व मुख्य सड़कों पर रखे गए थे, लेकिन वर्तमान में इनकी सफाई पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जा रहा है। गढ़ी बोलनी रोड, दिल्ली रोड, ब्रास मार्केट, कोनसीवास रोड व बाइपास सहित मोहल्लों में जगह-जगह कचरे के ढेर लगे हुए है।

हरिभूमि सरोकार

गेट से पैदल निकलना भी मुश्किल

नगर परिषद के सरकुलर रोड साइड वाले गेट पर पिछले एक सप्ताह से सीवर ओवरफ्लो होने से गंदा पानी जमा हो रहा है। गेट के पास ही नप में आने वाले लोगों के लिए शौचालय बना हुआ है। सीवर का गंदा पानी जमा होने से लोगों को शौचालय में जाने में भी परेशानी उठानी पड़ रही है। वहीं गेट से पैदल निकलना भी मुश्किल हो रहा है।

कई महीनों बाद निकली स्वीपिंग मशीन

रेवाड़ी। नगर परिषद के मेन गेट के पास जमा सीवर ओवरफ्लो का गंदा पानी। फोटो : हरिभूमि

पार्कों में गोवंश का जमावड़ा

शहर के पार्कों की भी देखरेख नहीं की जा रही है। पार्कों में कचरे के ढेर लगे हुए है। पार्कों में रखे गए डस्टबिनों को खाली नहीं किया जा रहा है। वहीं टूटी चारदीवारी से पार्कों के अंदर गोवंश घुस कर गंदगी फैला रहे है। अग्रसेन चौक, सरकुलर रोड, राव तुलाराम पार्क के सामने व एमआरएफ सेंटर सहित कचरा डंपिंग प्वाइंटों पर पूरे दिन गोवंश का जमावड़ा लगा रहता है। नगर परिषद के सामने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस पार्क में जगह-जगह कचरा जमा है। नेहरू पार्क में पूरे दिन गोवंश घुसे रहते है।

कई महीनों में सड़क पर दिखी स्वीपिंग

शनिवार को कई महीनों बाद स्वीपिंग मशीन शहर में सफाई करती नजर आई। सफाई नहीं होने से सड़कों व डिवाइडरों के किनारे तथा चौराहों के पास मिट्टी जमा हो रही है। शनिवार को नगर परिषद की नववनियुक्त चेयरपर्सन विनीता पीपल ने शहर की सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया। इस दौरान अग्रसेन चौक पर स्वीपिंग मशीन सफाई करती मिली। उन्होंने मुख्य बाजार तक स्वीपिंग मशीन से सफाई कराई। स्वीपिंग मशीन पहली बार बाजार की सड़कों पर सफाई करती नजर आई। चेयरपर्सन ने कहा कि शहर की स्वच्छता और सौन्दर्य के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएंगे।

बाहर फैला कचरा

सुभाष पार्क में जमा कचरा

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में आरोपी।

वर्ष 2013 के गोकशी के मामले में पीओ गिरफ्तार

रेवाड़ी। सेक्टर-6 धारूहेड़ा थाना पुलिस ने अदालत की ओर से उद्घोषित अपराधी खुर्शीद निवासी गांव मेवली जिला नूंह को गिरफ्तार किया है। एसआई दिनेश ने बताया कि आरोपी वर्ष 2013 में थाना धारूहेड़ा में दर्ज गोकशी के मामले में अदालत में पेश नहीं हो रहा था। इसके बाद अदालत ने उसे पीओ घोषित कर दिया था, जिस पर पुलिस ने कार्यवाही करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश करके न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

- पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश करके न्यायिक हिरासत में भेज दिया

S.D. SR. SEC. SCHOOL
KARAWARA MANAK PUR, REWARI, HARYANA
BOARD EXAM RESULT 2025-26
Heartiest Congratulations TO STUDENTS, STAFF AND PARENTS FOR EXCELLENT PERFORMANCE
X और XII दोनों में टॉप... हरियाणा के TOP 10 में से 6 अकेले S.D. School से

BOARD EXAM RESULT 2025-26 : Class 12th

SCIENCE — 5th POSITION In HARYANA — 97.80% — MAHI D/o Fateh Singh, Vill. Inchhapuri
SCIENCE — 8th POSITION In HARYANA — 97.20% — VARSHA D/o Satya Bhan, Vill. Dhanora
SCIENCE — 9th POSITION In HARYANA — 97% — INDU D/o Monmohan, Vill. K.M. Pur
SCIENCE — 10th POSITION In HARYANA — 96.80% — MUSKAN D/o Anil Kumar, Vill. Lisana

BOARD EXAM RESULT 2025-26 : Class 10th

6th POSITION In HARYANA — 98.80% — BHUMIKA D/o Sachin Kumar, Vill. Shadipur
10th POSITION In HARYANA — 98% — BINESH KR. S/o Ram Kishor, Vill. Chillar

Hence Proved, 'S.D.' is the best school for studying SCIENCE

96.2% Meenakshi D/o Pardeep Kumar, Vill. Balewa
96% Shivani D/o Ishwar Singh, Vill. Asiaki Gorawas
95.8% Chanchal D/o Pawan Kumar, Vill. Ghilawas
95.2% Jaspreet Yadav D/o Surender Kumar, Vill. K.M. Pur
95% Teena D/o Bhoop Singh, Vill. Bhurthal Jat
94% Jiya D/o Rajeev Yadav, Vill. Mohdinpur
92.6% Chandni D/o Vijay Singh, Vill. K.M. Pur
92.6% Diksha D/o Pardeep Kumar, Vill. Asiaki Gorawas
92.4% Khushi D/o Somdutt, Vill. K.M. Pur
91.6% Siya D/o Mahesh Kumar, Vill. Balewa
89.4% Tannu Kumari D/o Rajesh, Vill. K.M. Pur
88.2% Aadesh Yadav S/o Naveen Kumar, Vill. Mohdinpur
88% Nitesh S/o Rajender Singh, Vill. K.M. Pur
87.4% NIDHI D/o Satpal, Vill. DOHKI
87.2% Rishab S/o Pawan Kumar, Vill. Khalilpur
86.2 Ishant S/o Mahesh Kumar, Vill. K.M. Pur
84.6% Chirag S/o Jaiparkash, Vill. Gangaicha jant
83.2% Deepanshu S/o Satish Singh, Vill. K.M. Pur

ARTS
95.6% Vanshika D/o Pramod Kumar, Vill. Nayagaon
94.6% Ashika Kumari D/o Shyani Pal, Vill. Asiaki Gorawas
93.8% Mahak Kumari D/o Surender Kumar, Vill. K.M. Pur
92.6% Bhawna D/o Kaushal Raj, Vill. Nayagaon
92.2% Divesh S/o Sandeep, Vill. Dhanora
90.4% Diksha Yadav D/o Pardeep Kumar, Vill. K.M. Pur
87.6% Ashu S/o Anil Kumar, Vill. Mohdinpur
85.2% Bharat S/o Ashwani, Vill. K.M. Pur
82.8% SANDESH S/o Kapil Dev, Vill. Chillar
81.6% Kashish D/o Ramesh Kumar, Rewari

COMMERCE
95.6% KRISHMA D/o Pritam Kumar, Vill. Khalilpur
94.2% Tannu D/o Sunil Kumar, Rewari
91.6% Harsh S/o Satender, Vill. Nayagaon
90.4% Dhruv S/o Mukesh, Vill. Ghilawas
90.4% Himani D/o Sandeep Yadav, Vill. K.M. Pur
88.6% Shanu D/o Inderjeet, Vill. Nayagaon
88.2% Harsh Yadav S/o Ajit Singh, Vill. K.M. Pur
87.6% Prachi D/o Bhupindra Singh, Vill. Dabri
86.4% Daksh Yadav S/o Rakesh, Vill. Asiaki Gorawas
84.2% Lakshay S/o Rajender Singh, Vill. Asiaki Gorawas

97.8% Anjali D/o Harkishan, Vill. K.M. Pur
97.8% Sameer Kumar S/o Dinesh Kumar, Vill. Khetiawas
97.8% Yogesh S/o Inderjeet, Vill. K.M. Pur
97% Prachi D/o Dharmender, Vill. Lisana
96.6% Monika D/o Harish Kumar, Vill. Kumbhawas
96.6% Mukul S/o Lalit Kumar, Vill. K.M. Pur
96.6% Prince Yadav S/o Rajesh Kumar, Vill. K.M. Pur
96.4% Dikshita D/o Pawan Kumar, Vill. Gokalpur
96.4% Ishant Yadav S/o Kaushal Raj, Vill. Nayagaon
96.4% Mukul Yadav S/o Navneet Yadav, Vill. Janti
96.2% Simaran D/o Narvir Singh, Vill. Mohdinpur
96.2% Anuj S/o Sandeep, Vill. K.M. Pur
96.2% Yash Vats S/o Manoj, Vill. Ghilawas
95.6% Yanish Yadav S/o Balkishan, Vill. K.M. Pur
95.2% Radhika D/o Pramod, Vill. Naya Gaon
95.2% Ritesh Kumar S/o Kashi Ram, Vill. Chillar
95% Jatin S/o Vinod, Rewari
94.8% Yash Yadav S/o Mukesh Kumar, Vill. Janti
94.6% Harsh S/o Vijay Yadav, Vill. K.M. Pur
94.6% Hitesh S/o Mahavir Singh, Vill. Shadipur
94.4% Himanshi D/o Sanjay Kumar, Rewari
94.2% Seenam D/o Inderjeet Singh, Vill. K.M. Pur
94.2% Mayank Yadav S/o Yadav Bijendra Ram Kishan, Vill. K.M. Pur
93.8% Bhumika D/o Jaiveer Yadav, Vill. Gokalgarh
93.8% Tanuj Kumar S/o Hukam Singh, Vill. Dabri
93.4% Ishika D/o PRITAM, Vill. REHENWA
93.4% Bhavishya S/o Arun, Vill. K.M. Pur
93.4% Gourav S/o Naresh Kumar, Vill. Chillar
93.2% Lakshay S/o SATPAL, Vill. K.M. PUR
92.6% Vansh S/o Narbir, Vill. K.M. Pur
92.4% Himanshi D/o Yudhbir Singh, Vill. K.M. Pur
92.4% Bhupesh S/o Pardeep Kumar, Vill. K.M. Pur
92% Bhavuk S/o Tej Ram, Vill. Chowki No. 1
91.8% Rishita D/o Pawan Kumar, Vill. Khalilpur
91.6% Kunal Yadav S/o Satender Kumar Yadav, Vill. Shadipur
91.6% Nishant S/o Bijender, Vill. Ghilawas
91% Paras S/o Rajesh, Vill. K.M. Pur
90.6% Janvi D/o Rakesh, Vill. Choki No. 1
90.2% Muskan D/o Naresh Kumar, Vill. K.M. Pur
90% Rajat Yadav S/o Sandeep Yadav, Vill. Gokalpur

CHAIRMAN: SHEOTAJ SINGH YADAV M. 9416248533
sdschoolkmpur@gmail.com www.sdschool.com fb.me/sdschoolkmpur
DIRECTOR: DEEPAK YADAV M. 9466771888

बाजार में बढ़ी अनिश्चितता, निवेशकों की पहली पसंद बन रहे लिक्विड फंड

अप्रैल में लिक्विड फंड्स ने लगभग 5.5 से 6 प्रतिशत तक रिटर्न दिया

पूंजी सुरक्षित और जरूरत पड़ने पर आसानी से निकाला जा सकता है पैसा

शेयर बाजार में लगातार जारी उतार-चढ़ाव ने निवेशकों की चिंता बढ़ाई, रहना होगा अलर्ट

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

विदेशी बाजारों में तनाव, वैश्विक आर्थिक मंदी की आशंकाएं और भू-राजनीतिक घटनाक्रम निवेशकों को जोखिम लेने से रोक रहे

वैश्विक तनाव, शेयर बाजार की अस्थिरता और आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच निवेशकों का भरोसा अब सुरक्षित निवेश विकल्पों की ओर तेजी से बढ़ रहा है। यही वजह है कि अप्रैल 2026 में लिक्विड फंड्स में निवेश सात साल के सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गया। निवेशक फिलहाल जोखिम से दूरी बनाकर ऐसे विकल्प चुन रहे हैं जहां पूंजी अपेक्षाकृत सुरक्षित रहे और जरूरत पड़ने पर पैसा आसानी से निकाला भी जा सके। म्यूचुअल फंड उद्योग से जुड़े संगठन एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल 2026 में लिक्विड फंड्स में शुद्ध निवेश 1.65 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया। पिछले वर्ष अप्रैल में यह आंकड़ा 1.19 लाख करोड़ रुपये था। यानी एक साल में लगभग 46 हजार करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की गई। यह बीते कई वर्षों में सबसे बड़ा उछाल माना जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि शेयर बाजार में लगातार जारी उतार-चढ़ाव ने निवेशकों की चिंता बढ़ा दी है। विदेशी बाजारों में तनाव, वैश्विक आर्थिक मंदी की आशंकाएं और भू-राजनीतिक घटनाक्रम निवेशकों को ज्यादा जोखिम लेने से रोक रहे हैं। ऐसे माहौल में लोग अपने निवेश को सुरक्षित रखने के लिए लिक्विड फंड्स का सहारा ले रहे हैं।

बैंकिंग सिस्टम में बढ़ी नकदी बनी बड़ी वजह

विशेषज्ञों के अनुसार इस बढ़ोतरी के पीछे बैंकिंग सिस्टम में मौजूद अतिरिक्त नकदी भी अहम कारण रही। अप्रैल के दौरान बैंकिंग सिस्टम में अतिरिक्त नकदी 2 लाख करोड़ से 5.5 लाख करोड़ रुपये के बीच रही, जबकि पिछले साल यह आंकड़ा काफी कम था। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की नीतियों और बाजार में पर्याप्त लिक्विडिटी बनाए रखने के प्रयासों का असर भी साफ दिखाई दिया। बैंकों और कंपनियों के पास अतिरिक्त नकदी रही, जिसे उन्होंने बेहतर रिटर्न और सुरक्षित पार्किंग के लिए लिक्विड फंड्स में निवेश किया।

कम जोखिम में बेहतर रिटर्न का आकर्षण

लिक्विड फंड्स में बढ़ती दिलचस्पी की एक और बड़ी वजह इनका अपेक्षाकृत बेहतर रिटर्न रहा। अप्रैल में लिक्विड फंड्स ने लगभग 5.5 से 6 प्रतिशत तक का रिटर्न दिया, जबकि ओवरनाइट दरें लगभग 5 प्रतिशत के आसपास रहीं। इसके अलावा सर्टिफिकेट ऑफ डिपॉजिट (सीडी) की ब्याज दरें 6.5 प्रतिशत से 7.5 प्रतिशत तक पहुंचीं, जिसने निवेशकों को आकर्षित किया। ऐसे में कम जोखिम के साथ थोड़े बेहतर रिटर्न की तलाश कर रहे निवेशकों के लिए लिक्विड फंड्स एक बेहतर विकल्प बनकर उभरे। विशेषज्ञ मानते हैं कि जब शेयर बाजार में अस्थिरता बढ़ती है, तब निवेशक पूंजी बचाने को प्राथमिकता देते हैं। ऐसे समय में इक्विटी निवेश की तुलना में लिक्विड फंड्स ज्यादा सुरक्षित माने जाते हैं क्योंकि इनमें पैसा कम अवधि वाले डेट इंस्ट्रूमेंट्स में लगाया जाता है।

आखिर क्या होते हैं लिक्विड फंड्स

लिक्विड फंड्स डेट म्यूचुअल फंड की श्रेणी में आते हैं। ये निवेशकों का पैसा ट्रेजरी बिल्स, सरकारी प्रतिभूतियों, कॉल मनी और अन्य शॉर्ट टर्म मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं। इन फंड्स की खासियत यह होती है कि इनमें निवेश की मैच्योरिटी अवधि बहुत कम होती है। आमतौर पर ये 91 दिनों तक की अवधि वाले साधनों में निवेश करते हैं। इसी कारण इनमें जोखिम अपेक्षाकृत कम माना जाता है और जरूरत पड़ने पर निवेशक आसानी से पैसा निकाल सकते हैं। यही वजह है कि कम समय के लिए पैसा पार्क करने वाले निवेशक लिक्विड फंड्स को पसंद करते हैं। उदाहरण के तौर पर अगर किसी व्यक्ति को दो-तीन महीने बाद बच्चों की फीस जमा करनी हो, यात्रा पर जाना हो या कोई अन्य छोटा वित्तीय लक्ष्य पूरा करना हो, तो वह रकम लिक्विड फंड में रख सकता है।

सेविंग अकाउंट से बेहतर विकल्प क्यों

वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि लिक्विड फंड्स कई मामलों में सेविंग अकाउंट से बेहतर साबित हो सकते हैं। बैंक सेविंग अकाउंट में जहां ब्याज दरें सीमित रहती हैं, वहीं लिक्विड फंड्स थोड़े बेहतर रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं। इसके अलावा इनमें निवेश और निकासी की सुविधा भी काफी आसान होती है। हालांकि यह ध्यान रखना जरूरी है कि लिक्विड फंड्स पूरी तरह जोखिम मुक्त नहीं होते, लेकिन अन्य म्यूचुअल फंड श्रेणियों की तुलना में इनमें जोखिम कम माना जाता है।

निवेशकों को क्या रखना चाहिए ध्यान

विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि लिक्विड फंड्स को लंबी अवधि के निवेश विकल्प के तौर पर नहीं देखना चाहिए। ये मुख्य रूप से कम अवधि की जरूरतों और अस्थायी निवेश के लिए बेहतर माने जाते हैं। अगर निवेशक लंबी अवधि में ज्यादा रिटर्न चाहते हैं, तो इक्विटी या हाइब्रिड फंड्स बेहतर विकल्प हो सकते हैं। वहीं जिन लोगों को कुछ महीनों के लिए सुरक्षित निवेश चाहिए, उनके लिए लिक्विड फंड्स उपयोगी साबित हो सकते हैं। इसके साथ ही निवेशकों को किसी भी फंड में निवेश करने से पहले उसकी रेटिंग, पोर्टफोलियो गुणवत्ता, एक्सपेंस रेशियो और फंड हाउस की विश्वसनीयता जरूर जांचनी चाहिए।

सुरक्षित निवेश की ओर बढ़ता रुझान

वर्तमान आर्थिक माहौल यह संकेत दे रहा है कि निवेशक अब केवल ऊंचे रिटर्न नहीं, बल्कि सुरक्षा और स्थिरता को भी प्राथमिकता दे रहे हैं। बाजार में अनिश्चितता बढ़ने पर सुरक्षित निवेश विकल्पों की मांग तेज होना स्वाभाविक माना जाता है। लिक्विड फंड्स में रिकॉर्ड निवेश इसी बदलती निवेश मानसिकता को दर्शाता है, जहां निवेशक फिलहाल जोखिम कम रखते हुए स्थिर और सुरक्षित विकल्पों की तलाश में हैं।

5 म्यूचुअल फंड्स ने बनाया निवेशकों का भरोसा मजबूत

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में लगातार बढ़ती अस्थिरता के बीच निवेशकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती सही म्यूचुअल फंड चुनने की होती है। आज बाजार में 1500 से ज्यादा म्यूचुअल फंड स्कीम मौजूद हैं और हर फंड खुद को सबसे बेहतर साबित करने की कोशिश करता है। ऐसे में केवल ज्यादा रिटर्न देखकर निवेश करना जोखिम भरा साबित हो सकता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि किसी भी फंड का सही आकलन केवल रिटर्न से नहीं, बल्कि उसके "रिस्क एडजस्टेड रिटर्न" से किया जाना चाहिए। यानी ऐसा फंड जो जोखिम कम रखते हुए लगातार बेहतर प्रदर्शन करे। हाल ही में किए गए एक विस्तृत विश्लेषण में कई म्यूचुअल फंड स्कीमों को शार्प रेशियो, सॉर्टिनो रेशियो, स्टैंडर्ड डिविएशन और रोलिंग रिटर्न जैसे मानकों पर परखा गया। इस विश्लेषण में पांच फंड सबसे मजबूत विकल्प बनकर सामने आए।

एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप फंड

सूची में पहला नाम एचडीएफसी फ्लेक्सी कैप फंड का है। यह फंड हाल ही में 1 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) पार करने वाला चुनिंदा फंड बना है। फंड ने पिछले कई वर्षों में लगातार मजबूत प्रदर्शन किया है। रोलिंग रिटर्न के आधार पर इसने तीन और पांच साल की अवधि में 19 प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न देने की क्षमता दिखाई है। विशेषज्ञों के मुताबिक, इस फंड की सबसे बड़ी ताकत बाजार गिरने के दौरान नुकसान को सीमित रखना रही है। इसका शार्प रेशियो और सॉर्टिनो रेशियो भी श्रेणी के अन्य फंड्स से बेहतर रहा। फंड का बड़ा निवेश बैंकिंग, ऑटोमोबाइल, हेल्थकेयर और आईटी सेक्टर में है। एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक और एसबीआई जैसी कंपनियां इसकी प्रमुख होल्डिंग्स में शामिल हैं।

बंधन लार्ज एंड मिड कैप फंड

दूसरे स्थान पर बंधन लार्ज एंड मिड कैप फंड रहा। इस फंड ने पिछले 10 वर्षों में अपनी श्रेणी के अधिकांश फंड्स से बेहतर प्रदर्शन किया है। तीन साल की रोलिंग अवधि में इस फंड ने औसतन 24 प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न दिया, जबकि श्रेणी का औसत लगभग 18 प्रतिशत रहा। यह फंड लगातार बदलते बाजार के हिसाब से पोर्टफोलियो में बदलाव करता है और इसी रणनीति ने इसे मजबूत बनाया है। फंड का निवेश मुख्य रूप से फाइनेंशियल, सर्विसेज, एनर्जी और हेल्थकेयर सेक्टर में है।

निप्पोन इंडिया लार्ज कैप फंड

निप्पोन इंडिया लार्ज कैप फंड भी जोखिम और रिटर्न के संतुलन के मामले में मजबूत विकल्प माना गया। पिछले 10 वर्षों में किसी भी सात साल की अवधि में इस फंड ने औसतन 15 प्रतिशत से ज्यादा रोलिंग रिटर्न दिया। यह श्रेणी औसत और निफ्टी 100 दोनों से बेहतर रहा। विशेषज्ञों के अनुसार इसकी सबसे बड़ी ताकत स्थिर प्रदर्शन और मजबूत स्टॉक चयन है। लंबे समय से एक ही फंड मैनेजर के नेतृत्व में रहने का फायदा भी इसे मिला है। फंड की प्रमुख हिस्सेदारी बैंकिंग, एनर्जी, हेल्थकेयर और कंज्यूमर सेक्टर में है।

एचडीएफसी मिड कैप फंड एसआईपी

एचडीएफसी मिड कैप फंड लंबे समय से मिडकैप निवेशकों के बीच लोकप्रिय बना हुआ है। अगर किसी निवेशक ने 10 साल पहले हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी शुरू की होती, तो आज उसका निवेश लगभग 35 लाख रुपये तक पहुंच चुका होता। फंड ने लंबे समय में करीब 20 प्रतिशत सालाना रिटर्न देने का रिकॉर्ड बनाया है। विशेषज्ञों का कहना है कि मिडकैप श्रेणी में अस्थिरता ज्यादा होती है, लेकिन इस फंड ने लगातार बेहतर संतुलन बनाए रखा। फंड का निवेश मुख्य रूप से फाइनेंशियल, हेल्थकेयर और ऑटोमोबाइल सेक्टर में फैला हुआ है।

इनवेस्को इंडिया स्मॉल कैप फंड

सूची में पांचवां नाम इनवेस्को इंडिया स्मॉल कैप फंड का रहा। स्मॉलकैप फंड्स को आमतौर पर ज्यादा जोखिम वाला माना जाता है, लेकिन इस फंड ने जोखिम के मुकाबले मजबूत रिटर्न दिया है। तीन साल की रोलिंग अवधि में इसने लगभग 26 प्रतिशत तक का रिटर्न दिया, जबकि पांच और सात साल की अवधि में भी प्रदर्शन मजबूत रहा। फंड का फोकस तेजी से बढ़ने वाली कंपनियों की पहचान कर शुरुआती दौर में निवेश करना है। इसकी प्रमुख हिस्सेदारी हेल्थकेयर, सर्विसेज, ऑटोमोबाइल और कंज्यूमर सेक्टर में है।

आखिर क्या होता है रिस्क एडजस्टेड रिटर्न

विशेषज्ञों के मुताबिक, केवल ज्यादा रिटर्न देने वाला फंड हमेशा बेहतर नहीं होता। अगर किसी फंड में उतार-चढ़ाव बहुत ज्यादा हो, तो वह निवेशकों के लिए जोखिम बढ़ा सकता है। रिस्क एडजस्टेड रिटर्न ऐसे फंड्स को पहचानने का तरीका है जो कम जोखिम के साथ स्थिर और भरोसेमंद रिटर्न देते हैं।

निवेश से पहले यह रखें ध्यान

फंड का कम से कम 5-10 साल का रिकॉर्ड देखें, फंड मैनेजर का अनुभव जांचें

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में केवल बचत करना आर्थिक सुरक्षा के लिए काफी नहीं माना जाता। बढ़ती महंगाई, रिटायरमेंट की चिंता और भविष्य की जरूरतों ने निवेश को हर नौकरीपेशा व्यक्ति की प्राथमिकता बना दिया है। ऐसे में म्यूचुअल फंड एसआईपी यानी सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान सबसे लोकप्रिय निवेश विकल्पों में शामिल हो चुका है। हालांकि निवेशकों के मन में एक सवाल हमेशा रहता है कि आखिर किस उम्र में कितनी एसआईपीकरनी चाहिए।

अपने जोखिम और निवेश अवधि के हिसाब से फंड चुनें

विशेषज्ञों का मानना है कि निवेश में सबसे बड़ा अंतर ज्यादा रकम नहीं, बल्कि जल्दी शुरुआत पैदा करती है। जितना जल्दी निवेश शुरू किया जाता है, कंपाउंडिंग उतना ही बड़ा फायदा देती है।

20 की उम्र में शुरुआत सबसे ताकतवर

वित्तीय विशेषज्ञों के मुताबिक 20 से 29 साल की उम्र निवेश की शुरुआत के लिए सबसे बेहतरीन समय माना जाता है। इस दौर में जिम्मेदारियां कम होती हैं और जोखिम लेने की क्षमता ज्यादा होती है। अगर कोई व्यक्ति 20 साल की उम्र में हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी शुरू करता है और उसे औसतन 12 प्रतिशत सालाना रिटर्न मिलता है, तो 60 साल की उम्र तक करीब 11.88 करोड़ रुपये का फंड तैयार हो सकता है। लेकिन अगर वही निवेश 30 साल की उम्र से शुरू किया जाए, तो अंतिम फंड घटकर लगभग 3.5 करोड़ रुपये रह जाता है। यानी सिर्फ 10 साल की देरी से संभावित संपत्ति में 8 करोड़ रुपये से ज्यादा का अंतर आ सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार इस उम्र में फ्लेक्सी कैप, मिडकैप, इंडेक्स और ईएलएसएस फंड बेहतर विकल्प माने जाते हैं क्योंकि लंबी अवधि में इनमें बेहतर ग्रोथ की संभावना रहती है। हालांकि इस उम्र में सबसे बड़ी गलती निवेश टालते रहना और जल्दी अमीर बनने के चक्कर में हाई रिस्क थीमेटिक या स्मॉलकैप फंड्स में जरूरत से ज्यादा पैसा लगाना माना जाता है।

30 की उम्र में संतुलन जरूरी

30 की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते आमतौर पर आय बढ़ती है, लेकिन जिम्मेदारियां भी तेजी से बढ़ने लगती हैं। घर का लोन, शादी, बच्चों की पढ़ाई, बीमा और रिटायरमेंट प्लानिंग जैसी जरूरतें निवेश रणनीति को प्रभावित करती हैं। अगर कोई व्यक्ति 30 साल की उम्र से हर महीने 10 हजार रुपये की एसआईपी शुरू करता है और 60 साल तक निवेश जारी रखता है, तो 12 प्रतिशत अनुमानित रिटर्न के आधार पर लगभग 3.5 करोड़ रुपये का फंड तैयार हो सकता है। लेकिन यदि वही निवेश 40 की उम्र तक टाल दिया जाए, तो अंतिम फंड करीब 1 करोड़ रुपये तक सीमित रह सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस उम्र में संतुलित निवेश रणनीति अपनाना ज्यादा जरूरी होता है। फ्लेक्सी कैप, लार्ज एंड मिडकैप और एग्रेसिव हाइब्रिड फंड अच्छे विकल्प माने जाते हैं। इसके अलावा हर साल एसआईपी बढ़ाने की आदत यानी "स्टेप-अप एसआईपी" लंबे समय में बड़ा अंतर पैदा कर सकती है।

40 की उम्र में फोकस बदलना जरूरी

40 की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते निवेशकों का ध्यान केवल ज्यादा रिटर्न कमाने पर नहीं, बल्कि पूंजी की सुरक्षा और रिटायरमेंट प्लानिंग पर भी होता है। अगर कोई व्यक्ति 40 साल की उम्र में निवेश शुरू करता है और 60 साल तक करीब 3.5 करोड़ रुपये का फंड बनाना चाहता है, तो उसे हर महीने लगभग 35 से 40 हजार रुपये की **SIP** करनी पड़ सकती है। विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा इसलिए क्योंकि निवेशक कंपाउंडिंग के 10 अहम साल खो देता है और समय की कमी को ज्यादा निवेश से पूरा करना पड़ता है। इस उम्र में लार्जकैप, बैलेंस्ड एडवांटेज, मल्टी एसेट और शॉर्ट ड्यूरेशन डेट फंड जैसे विकल्प बेहतर माने जाते हैं।

हर उम्र में अलग होती है निवेश रणनीति

विशेषज्ञों का मानना है कि उम्र बढ़ने के साथ निवेशकों को इक्विटी से पूरी तरह बाहर नहीं निकलना चाहिए, बल्कि अपने जोखिम और वित्तीय जरूरतों के हिसाब से पोर्टफोलियो में बदलाव करना चाहिए। युवा निवेशक ज्यादा जोखिम लेकर ग्रोथ पर फोकस कर सकते हैं, जबकि 40 के बाद स्थिरता और पूंजी संरक्षण ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है।

निवेशकों की सबसे बड़ी गलतियां

- निवेश शुरू करने में देरी करना
- बाजार गिरने पर एसआईपी बंद कर देना
- सोशल मीडिया टिप्स पर आंख बंद कर भरोसा करना
- बार-बार फंड बदलना
- बिना लक्ष्य के निवेश करना

क्या कहते हैं जानकार

विशेषज्ञों का कहना है कि म्यूचुअल फंड कोई जल्दी अमीर बनने का जरिया नहीं है। यह लंबे समय तक अनुशासन और धैर्य के साथ संपत्ति बनाने का माध्यम है। जो निवेशक जल्दी शुरुआत करते हैं, नियमित निवेश बनाए रखते हैं और बाजार की गिरावट से घबराने के बजाय टिके रहते हैं, वही लंबे समय में बड़ा फंड तैयार कर पाते हैं।

निवेश से पहले समझें जोखिम

म्यूचुअल फंड निवेश बाजार जोखिमों के अधीन होते हैं। फंड का प्रदर्शन बाजार, ब्याज दरों और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार बदल सकता है। इसलिए निवेश करने से पहले अपनी जोखिम क्षमता, वित्तीय लक्ष्य और निवेश अवधि को समझना जरूरी है। जरूरत पड़ने पर वित्तीय सलाहकार की मदद लेना भी बेहतर विकल्प हो सकता है।

निवेश के ऑप्शन, जहां सुरक्षित रहेगा पूरा पैसा

तैयारी
बिजनेस डेस्क

आज के दौर में कमाई करना जितना कठिन हो गया है, उतना ही मुश्किल सही जगह निवेश करना भी हो गया है। शेयर बाजार, क्रिप्टो और हाई रिटर्न वाले कई विकल्प लोगों को आकर्षित जरूर करते हैं, लेकिन इनमें जोखिम भी काफी रहता है। ऐसे में ज्यादातर लोग ऐसी स्कीम चाहते हैं जहां पैसा सुरक्षित रहे और रिटर्न भी भरोसेमंद मिले। भारत में सरकार समर्थित कई निवेश योजनाएं हैं जो सुरक्षा, स्थिरता और टैक्स बचत तीनों का फायदा देती हैं। अगर आप भी बिना ज्यादा जोखिम उठाए अपने भविष्य को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना चाहते हैं, तो ये कुछ निवेश विकल्प आपके लिए बेहद काम के साबित हो सकते हैं।

1. बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी)

भारतीय परिवारों में फिक्स्ड डिपॉजिट यानी एफडी सबसे लोकप्रिय निवेश विकल्पों में से एक है। इसमें एक तय अवधि के लिए पैसा जमा किया जाता है और बैंक पहले से निश्चित ब्याज देता है। एफडीकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि बाजार के उतार-चढ़ाव का इस पर कोई असर नहीं पड़ता। निवेशक को पहले दिन से ही पता होता है कि मैच्योरिटी पर कितनी रकम मिलेगी। 5 साल की टैक्स सेविंग एफडी पर आयकर की धारा 80सी के तहत 1.5 लाख रुपये तक की टैक्स छूट भी मिलती है। वहीं वरिष्ठ नागरिकों को सामान्य ग्राहकों की तुलना में अधिक ब्याज दर दी जाती है। यही वजह है कि सुरक्षित निवेश चाहने वालों के लिए एफडी आज भी पहली पसंद बनी हुई है।

2. पब्लिक प्रोविडेंट फंड

अगर आपका लक्ष्य बच्चों की पढ़ाई, शादी या रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड तैयार करना है, तो पीपीएफ शानदार विकल्प माना जाता है। यह सरकार समर्थित योजना है, इसलिए इसमें पैसा पूरी तरह सुरक्षित रहता है। पीपीएफ की अवधि 15 साल होती है, लेकिन जरूरत पड़ने पर इसे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। इसकी सबसे खास बात यह है कि इसमें मिलने वाला ब्याज, निवेश और मैच्योरिटी राशि तीनों टैक्स फ्री होते हैं। लंबी अवधि में कंपाउंडिंग का फायदा मिलने से छोटी-छोटी बचत भी बड़ा फंड बन जाती है। यही कारण है कि इसे सबसे भरोसेमंद लॉन्ग टर्म निवेश योजनाओं में गिना जाता है।

3. नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस)

एनपीएसयानी नेशनल पेंशन सिस्टम एक बेहतरीन विकल्प है। इसे पेंशन फंड रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी (पीएफआरडीए) संचालित करती है। इस योजना में निवेश का एक हिस्सा सरकारी बॉन्ड और कॉर्पोरेट बॉन्ड में लगाया जाता है, जिससे जोखिम कम रहता है। एनपीएस में धारा 80सी के तहत टैक्स छूट मिलती ही है, साथ ही अतिरिक्त 50 हजार की अलग टैक्स छूट का लाभ भी मिलता है।

4. गोल्ड निवेश

भारत में सोना सिर्फ गहना नहीं, बल्कि सुरक्षित निवेश भी माना जाता है। हालांकि अब फिजिकल गोल्ड खरीदने के बजाय लोग एसजीबी और गोल्ड ईटीएफ जैसे विकल्पों की ओर बढ़ रहे हैं। सोने की कीमतें लंबे समय में आमतौर पर बढ़ती रही हैं, इसलिए इसे महंगाई के खिलाफ मजबूत सुरक्षा माना जाता है। खास बात यह है कि एसजीबी में निवेश करने पर सरकार करीब 2.5 प्रतिशत सालाना ब्याज भी देती है। मैच्योरिटी पर टैक्स छूट का फायदा इसे और आकर्षक बनाता है। यही वजह है कि विशेषज्ञ निवेश पोर्टफोलियो में कुछ हिस्सा गोल्ड में रखने की सलाह देते हैं।

धैर्य रखने वालों को ही मिलता है बड़ा मुनाफा, बनाएं बेहतर रणनीति

8 साल से ज्यादा निवेश में नुकसान की संभावना लगभग न के बराबर

लंबी अवधि की एसआईपी बनेगी बाजार की ढाल

सुझाव
बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव हमेशा निवेशकों की चिंता बढ़ाता है। बाजार कभी तेजी से ऊपर जाता है तो कभी अचानक गिरावट निवेशकों का भरोसा डगमगा देती है। खासकर छोटे निवेशक अक्सर इसी डर में रहते हैं कि कहीं उनकी मेहनत की कमाई बाजार की मंदी में डूब न जाए। लेकिन अब एक नई स्टडी ने यह साबित कर दिया है कि अगर निवेशक धैर्य बनाए रखें और लंबी अवधि तक एसआईपी (सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) में निवेश जारी रखें, तो बाजार की वोलैटिलिटी भी उन्हें नुकसान नहीं पहुंचा पाती। हाल ही में सामने आई एक रिसर्च रिपोर्ट में कहा गया है कि इक्विटी एसआईपी में जितनी लंबी अवधि तक निवेश किया जाता है, नुकसान का खतरा उतना ही कम होता जाता है। यहां तक कि 8 साल या उससे अधिक समय तक लगातार निवेश करने वाले निवेशकों को किसी भी अवधि में नुकसान नहीं हुआ। यह रिपोर्ट उन लाखों निवेशकों के लिए राहत भरी खबर है जो हर महीने म्यूचुअल फंड में एसआईपी के जरिए निवेश करते हैं।

15 साल की एसआईपी में रिटर्न ज्यादा स्थिर और भरोसेमंद

विशेषज्ञ बोले-कम से कम एक दशक तक रखें निवेश

युवाओं के लिए छोटी रकम से बड़ा फंड बनाने का आसान तरीका

30 साल के आंकड़ों से निकला निष्कर्ष

अगस्त 1996 से अप्रैल 2026 तक के सेंसेक्स टीआरआई के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। इसमें अलग-अलग अवधियों की एसआईपी के रिटर्न को देखा गया। अध्ययन का मकसद यह समझना था कि समय बढ़ने के साथ निवेशकों का जोखिम किस तरह कम होता है। रिपोर्ट में पाया गया कि कम अवधि की एसआईपी में रिटर्न काफी अस्थिर रहे। तीन साल की अवधि में निवेशकों को जहां एक ओर 55.6 प्रतिशत तक का शानदार रिटर्न मिला, वहीं दूसरी ओर कुछ निवेशकों को 24.6 प्रतिशत तक का नुकसान भी उठाना पड़ा। इसका मतलब साफ है कि कम समय में बाजार की चाल निवेशकों को बड़ा फायदा भी दे सकती है और भारी नुकसान भी। लेकिन जैसे-जैसे निवेश की अवधि बढ़ती गई, जोखिम घटता गया। 8 साल या उससे ज्यादा की अवधि में किए गए किसी भी एसआईपी निवेश में नुकसान दर्ज नहीं हुआ।

क्यों असरदार लंबी अवधि की एसआईपी

विशेषज्ञों के मुताबिक, एसआईपी का सबसे बड़ा फायदा "रुपी कॉस्ट एवरेजिंग" होता है। जब बाजार नीचे होता है, तब निवेशक को कम कीमत पर ज्यादा यूनिट मिलती हैं और जब बाजार ऊपर होता है, तब कम यूनिट मिलती हैं। लंबे समय में यह औसत निवेश लागत को संतुलित कर देता है। इसके अलावा लंबी अवधि में बाजार की गिरावट का असर धीरे-धीरे खत्म हो जाता है। शेयर बाजार भले ही कुछ महीनों या वर्षों तक कमजोर रहे, लेकिन ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो लंबे समय में बाजार ने हमेशा रिकवरी की है। यही कारण है कि धैर्य रखने वाले निवेशकों को बेहतर रिटर्न मिलता है। रिपोर्ट के अनुसार 15 साल की एसआईपी में रिटर्न का दायरा काफी सीमित हो गया। यहां रिटर्न 7.3 प्रतिशत से 18.2 प्रतिशत के बीच रहा। इसका मतलब यह है कि लंबी अवधि में निवेशकों को अपेक्षाकृत स्थिर और भरोसेमंद रिटर्न मिलता है।

दस साल तक निवेश बनाए रखें

एसआईपी का असली फायदा तभी मिलता है जब निवेशक लंबे समय तक निवेश बनाए रखे। उनका मानना है कि कम से कम 10 साल तक निवेश करना चाहिए ताकि बाजार के विभिन्न चक्रों का फायदा मिल सके।

समय के साथ बढ़ी रिटर्न की संभावना

स्टडी में यह भी सामने आया कि निवेश की अवधि बढ़ने के साथ 10 प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न मिलने की संभावना भी तेजी से बढ़ती गई। 3 साल की एसआईपी में केवल 67 प्रतिशत मामलों में 10 प्रतिशत से ज्यादा रिटर्न मिला। 10 साल की एसआईपी में यह आंकड़ा 95 प्रतिशत तक पहुंच गया।12 से 15 साल की अवधि में 98 प्रतिशत निवेशकों को 10 प्रतिशत से ज्यादा का रिटर्न मिला। यानी निवेशक जितना अधिक समय तक बाजार में बने रहते हैं, उनके अच्छे रिटर्न पाने की संभावना उतनी ही मजबूत हो जाती है।

एसआईपी बंद करना बड़ी गलती

अक्सर देखा जाता है कि बाजार में गिरावट आते ही निवेशक घबरा जाते हैं और अपनी एसआईपी बंद कर देते हैं। विशेषज्ञ इसे सबसे बड़ी गलती मानते हैं। दरअसल, बाजार में गिरावट के दौरान ही निवेशकों को कम कीमत पर ज्यादा यूनिट मिलती हैं, जो भविष्य में बाजार सुधरने पर बड़ा मुनाफा देती हैं। अगर निवेशक गिरावट के समय निवेश बंद कर देता है, तो वह बाजार की रिकवरी का पूरा फायदा नहीं उठा पाता। इसलिए निवेशकों को बाजार की अस्थायी गिरावट से घबराने के बजाय अनुशासन बनाए रखना चाहिए।

युवा निवेशकों के लिए बड़ा अवसर

विशेषज्ञों का कहना है कि युवाओं के लिए एसआईपी सबसे अच्छा निवेश विकल्प बनकर उभरा है। नौकरी की शुरुआत में छोटी रकम से निवेश शुरू करके लंबे समय में बड़ा फंड तैयार किया जा सकता है। अगर कोई निवेशक 25 साल की उम्र में हर महीने 5 हजार रुपये की एसआईपी शुरू करता है और औसतन 12 प्रतिशत सालाना रिटर्न मिलता है, तो 25-30 साल में करोड़ों रुपये का फंड तैयार हो सकता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार एसआईपी को दीर्घकालिक संपत्ति निर्माण का सबसे प्रभावी तरीका मानते हैं।

धैर्य ही सफलता की कुंजी

इस पूरी स्टडी का सबसे बड़ा संदेश यही है कि शेयर बाजार में सफलता पाने के लिए धैर्य बेहद जरूरी है। कम समय में बाजार का उतार-चढ़ाव निवेशकों को परेशान कर सकता है, लेकिन लंबी अवधि में यही बाजार संपत्ति बनाने का सबसे मजबूत माध्यम बन जाता है। एसआईपी निवेशकों के लिए सबसे जरूरी बात यह है कि वे नियमित निवेश जारी रखें, बाजार की गिरावट से न डरें और लंबी अवधि का नजरिया अपनाएं। क्योंकि समय के साथ बाजार की अस्थिरता कम होती जाती है और निवेशकों के लिए बेहतर रिटर्न की संभावना मजबूत होती जाती है।

खबर संक्षेप

यादव कल्याण सभा का हेल्थ चैकअप कैंप आज

रेवाड़ी। यादव कल्याण सभा की ओर से 24 मई को सुबह 9 से 11 बजे तक गढ़ी बोलनी रोड स्थित श्री कृष्ण भवन में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। कैंप में मरीजों को ओपीडी सेवाएं व फ्री दवाईयां प्रदान की जाएगी। यादव सभा प्रवक्ता प्रो. सतीश यादव ने बताया शिविर में विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम मेडिसन, हड्डी रोग, यूरोलॉजी, नेत्र रोग, चर्म रोग व बाल रोग के मरीजों की स्वास्थ्य जांच करेगी।

पुलिस ने भटके बच्चे को परिजनों से मिलाया

सतनाली मंडी। सतनाली पुलिस ने सतर्कता का उदाहरण पेश करते हुए रास्ता भटक कर आए एक बच्चे को उसके परिवार से मिलवाने में सराहनीय कार्य किया है। पुलिस प्रवक्ता सुमित कुमार के अनुसार कल देर शाम नियमित गश्त के दौरान पुलिस टीम को यह बच्चा सतनाली क्षेत्र में अकेला घूमता हुआ मिला था। पुलिसकर्मियों ने तुरंत बच्चे को अपने संरक्षण में लिया। बच्चे ने पुलिस को बताया कि वह मूल रूप से दिल्ली का रहने वाला है।

अदम्य प्री-नेशनल राइफल शूटिंग में लेगें भाग

महेंद्रगढ़। कनीना निवासी एवं ओडियम इंटरनेशनल स्कूल के 14 वर्षीय छात्र अदम्य खैरवाल ने देहरादून में 16 मई को आयोजित 10 मीटर राइफल शूटिंग प्री-नेशनल प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर 400 में से 389.1 अंक प्राप्त कर प्री-नेशनल के लिए क्वालिफाई किया। तकनीक और शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी अदम्य खैरवाल लगातार नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं और युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा बनते जा रहे हैं।

श्री अनाथ गोशाला में 160 क्विंटल तूड़ा किया दान

नारनौल। गोसेवा मंडल के सानिध्य में श्री अनाथ गौशाला में सेवा व समर्पण का एक सराहनीय कार्य किया गया। स्वर्गीय गुलजारीलाल व स्वर्गीय लक्ष्मीबाई की पुण्य स्मृति में उनके पड़पोत्र युग अग्रवाल ने गोशाला में लगभग 160 क्विंटल तूड़ा दान किया गया। इस अवसर पर मुकेश अग्रवाल, शारदा देवी व नितिन अग्रवाल, गोशाला के प्रधान उज्जनपाल, गोसेवा मंडल प्रधान सतपाल यादव आदि मौजूद रहे।

ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने की एवज में मांगे थे 4700

एसीबी की कार्रवाई: लाइसेंस क्लर्क 4500 रुपये की रिश्वत लेते गिरफ्तार

वीरवार को एसीबी ने होमगार्ड कमांडेंट सुधीर को 50 हजार की रिश्वत के साथ किया था गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेवाड़ी। गढ़ी बोलनी रोड स्थित एसीबी कार्यालय। फोटो : हरिभूमि

भ्रष्टाचार के खिलाफ एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) की कार्रवाई लगातार दूसरे दिन भी जारी रही। शुक्रवार देर रात एसीबी टीम ने लाइसेंस शाखा में कार्यरत एक क्लर्क को 4500 रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को छुट्टी के बाद अनाज मंडी क्षेत्र से पकड़ा गया। इससे एक दिन पहले वीरवार को एसीबी ने होमगार्ड कमांडेंट सुधीर को 50 हजार रुपए की रिश्वत के साथ गिरफ्तार किया था। लगातार हो रही कार्रवाई से सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों में हड़कंप मचा हुआ है। जानकारी के अनुसार अमरजीत एचकेआरएन के तहत लाइसेंस शाखा में क्लर्क के पद पर कार्यरत है। शहर के मोहल्ला छिपटवाड़ा निवासी गौरव सैनी को लर्निंग ड्राइविंग लाइसेंस बनवाना था। इस सिलसिले में उसकी मुलाकात अमरजीत से हुई। आरोप है कि अमरजीत ने लाइसेंस बनवाने के एवज में 4700 रुपए की मांग की। बाद में दोनों के बीच 4500 रुपए में सौदा तय हो गया। गौरव सैनी ने मामले की शिकायत एसीबी को दी। शिकायत मिलने के बाद एसीबी टीम ने अपने स्तर पर जांच की, जिसमें आरोप सही पाए गए। इसके बाद आरोपी को रंगे हाथ पकड़ने की योजना बनाई गई। एसीबी इंस्पेक्टर जयपाल ने बताया कि आरोपी अमरजीत ने गौरव को पैसे देने के लिए शुक्रवार को छुट्टी के बाद अनाज मंडी में बुलाया था। अमरजीत ने जैसे ही पैसे लिए एसीबी की टीम ने उसे तुरंत दबोच लिया।

पांडुलिपि सर्वेक्षण देश की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने का प्रयास : उपायुक्त

- पांडूलिपि सर्वेक्षण से आगामी पीढ़ियों को मिलेगा प्राचीन ज्ञान से जोड़ने का मौका

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

डीसी अभिषेक मीणा।

डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि देशभर में प्राचीन पांडुलिपियों, ताड़पत्रों एवं दुर्लभ अभिलेखों का सर्वेक्षण, प्रलेखन, संरक्षण एवं डिजिटलीकरण कर उन्हें शोधकतार्ओं, विद्यार्थियों एवं आमजन के लिए सुलभ पहुंच बनाने के उद्देश्य से ज्ञान भारतम् मिशन चलाया जा रहा है। अभियान के तहत लगभग 75 वर्ष या उससे अधिक पुरानी पांडुलिपियों को प्राथमिकता दी जाएगी।

यह सर्वे कार्य 15 जून तक चलाया जाएगा। डीसी ने बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा और दर्शन को बौद्धिक धरोहर के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में पांडुलिपियों के संरक्षण और उन्हें भावी पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुंचाने के उद्देश्य से ज्ञान भारतम् मिशन के तहत राष्ट्रीय पांडुलिपि सर्वेक्षण अभियान को जिला में प्रभावी रूप से चलाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह मिशन न केवल देश की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है, बल्कि इससे आने वाली पीढ़ियों को प्राचीन ज्ञान से जोड़ने का भी कार्य किया जा रहा है। उन्होंने सभी खंड विकास एवं पंचायत अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि वे ग्राम सचिवों के माध्यम से गांव-गांव में स्थित मंदिरों, गुरुद्वारों, मस्जिदों तथा अन्य धार्मिक एवं सामाजिक संस्थानों में उपलब्ध हस्तलिखित पांडुलिपियों की जानकारी एकत्रित करें। यदि किसी स्थान पर पांडुलिपियां उपलब्ध होती हैं, तो उन्हें ह्यज्ञान भारतम्-ऐप के माध्यम से जियो-टैग कर पोर्टल पर अपलोड किया जाए।

राजकीय पाठशाला में विद्यार्थियों को वितरित की यूनिफॉर्म

रेवाड़ी। राजकीय प्राथमिक पाठशाला गढ़ी बोलनी में शनिवार को बावल स्थित कंपनी की ओर से सीएसआर के तहत छात्र-छात्राओं को स्कूल यूनिफॉर्म व अन्य सामग्री वितरित की गई। इस अवसर पर कंपनी के प्लांट हेड फाइनेंस राजीव गुप्ता, एचआर हेड सुरेश भारद्वाज तथा सेक्रेटरी विपिन शर्मा उपस्थित थे। उन्होंने बच्चों को शिक्षा का महत्व बताते हुए कहा कि मेहनत और लगन से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने विद्यार्थियों को भविष्य में देश का जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। कंपनी प्रतिनिधियों ने कहा कि शिक्षा और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए कंपनी सदैव सामाजिक कार्यों में अपनी भागीदारी निभाती रहेगी। बच्चों को शिक्षण सामग्री और आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराना समाज के प्रति कंपनी की जिम्मेदारी है।

रेवाड़ी। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत करते हुए।

प्राइमरी स्कूल झाल की मुख्य शिक्षिका सेवानिवृत्त, स्टाफ ने दी भावभीनी विदाई

- अनिता गर्ग शिक्षा विभाग में 29 वर्ष की सेवा के बाद रिटायर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कोसली

रेवाड़ी। सेवानिवृत्त मुख्य शिक्षिका को स्मृति चिन्ह भेंट करते स्टाफ सदस्य।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय झाल की मुख्य शिक्षिका अनिता गर्ग शिक्षा विभाग में 29 वर्ष के सेवा काल के उपरांत सेवानिवृत्त हो गई। शनिवार को विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य शिक्षिका को भावभीनी विदाई दी गई। इस अवसर पर हरियाणा स्कूल लेक्चरर एसोसिएशन के प्रदेश उपाध्यक्ष रविंद्र भाकली व रावमा विद्यालय के प्राचार्य राजेंद्र सिंह ने कहा कि अनीता गर्ग सरलता, सहजता, सौम्यता एवं कर्तव्य परायणता की मिसाल हैं। उन्होंने अपने 29 वर्ष के अध्यापन काल में कर्तव्य परायणता के साथ अपने कार्य को अंजाम दिया। उनके पढाए हुए छात्र-छात्राओं ने कामयाबी के शिखर को छुआ और आज वे देश के विभिन्न क्षेत्रों में सेवारत होकर देश की सेवा कर रहे हैं। प्राथमिक विद्यालय व रावमा विद्यालय स्टाफ की ओर से उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किए गए। सेवानिवृत्त मुख्य शिक्षिका ने विद्यालय की स्टिरियो माइक सिस्टम भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका मनी ने किया। मौके पर पूर्व सरपंच ठाकुर ओम सिंह, एसएमसी प्रधान संदीप सिंह, रवि मित्तल, जुडी विद्यालय के प्राचार्य विजेंदर सिंह, कोसली राकवमा विद्यालय के प्राचार्य अनुप सिंह, बालयोगेश्वर, हरीश शर्मा, धर्मेंद्र यादव आदि रहे।

खरखड़ा को जड़थल सब डिविजन में जोड़ने से ग्रामीणों में रोष, आंदोलन की दी चेतावनी

सामाजिक कार्यकर्ता ने मुख्यमंत्री, बिजली मंत्री व एसीएस सहित बिजली निगम को भेजा पत्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶ धारूहेड़ा

धारूहेड़ा सीमा से सटे गांव खरखड़ा को वर्तमान धारूहेड़ा बिजली सब डिविजन से हटाकर नवगठित जड़थल सब डिविजन में जोड़ने की सूचना के बाद ग्रामीणों में भारी रोष व्याप्त है। मामले को लेकर गांव खरखड़ा निवासी सामाजिक कार्यकर्ता प्रकाश यादव ने मुख्यमंत्री, हरियाणा के बिजली मंत्री व एसीएस बिजली निगम सहित जिले के अधिकारियों को पत्र भेजकर इस निर्णय पर रोक लगाने की मांग की है। उन्होंने कहा कि गांव खरखड़ा भौगोलिक, सामाजिक और प्रशासनिक रूप से वर्षों से धारूहेड़ा क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। गांव से धारूहेड़ा बिजली सब डिविजन कार्यालय की दूरी करीब डेढ़ किलोमीटर है, जिससे ग्रामीणों को बिजली संबंधी शिकायत, बिल संशोधन, नए कनेक्शन, ट्रांसफॉर्मर खराबी और अन्य कार्यों के लिए आसानी से सुविधा मिल जाती है। उन्होंने बताया कि धारूहेड़ा क्षेत्र पहले से ही प्रमुख औद्योगिक एवं व्यावसायिक केंद्र के रूप में विकसित है, जहां परिवहन, बाजार, सरकारी कार्यालय और अन्य आवश्यक सेवाएं नजदीक उपलब्ध हैं। गांव के अधिकांश लोगों का दैनिक आवागमन और प्रशासनिक कार्य भी धारूहेड़ा से ही जुड़ा हुआ हैं। ऐसे में गांव को अचानक 11 किलोमीटर दूर स्थित जड़थल सब डिविजन में जोड़ना ग्रामीणों पर अनावश्यक बोझ डालने जैसा है। उन्होंने बताया कि खरखड़ा पंचायत की ओर से पूर्व में 33 केवी पावर हाउस के लिए निगम को भूमि उपलब्ध कराई गई थी और वर्तमान में पावर हाउस संचालित भी है। इसके बावजूद गांव की सुविधाओं को नजरअंदाज कर दूरस्थ सब डिविजन में जोड़ना ठीक नहीं है।

ये भी बोले सामाजिक कार्यकर्ता

प्रकाश यादव ने कहा कि जड़थल की दूरी अधिक होने के कारण किसानों, बुजुर्गों, मजदूरों और आम उपभोक्ताओं को छोटी-छोटी समस्याओं के समाधान के लिए भी लंबी दूरी तय करनी पड़ेगी। इससे समय और आर्थिक नुकसान दोनों बढ़ेंगे। ग्रामीणों ने प्रशासन से खरखड़ा को पूर्ववत धारूहेड़ा बिजली सब डिविजन में ही बनाए रखने की मांग की है ताकि ग्रामीणों को भविष्य में अनावश्यक परेशानियों का सामना न करना पड़े। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि ग्रामीणों की सुविधाओं की अनदेखी कर यह निर्णय लागू किया गया तो गांव के लोग एकजुट होकर आंदोलन करने को मजबूर होंगे।

लुखी की शिवानी नौसेना की एजुकेशन ब्रांच में बनी सब-लेफ्टिनेंट, ग्रामीणों ने किया सम्मान

- शिवानी के पिता सीआरपीएफ में एएसआई के रूप में कार्यरत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कोसली

रेवाड़ी। लुखी में शिवानी यादव का सम्मान करते हुए।

क्षेत्र के गांव लुखी की होनहार बेटी शिवानी यादव के भारतीय नौसेना की एजुकेशन ब्रांच में सब-लेफ्टिनेंट के पद पर चयनित होने पर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व पार्षद अमित कुमार यादव थे। इस मौके पर संस्था के संरक्षक रविन्द्र आशावादी, प्रदेश स्तरीय सामाजिक संगठन आवाज फाउंडेशन के प्रदेश महासचिव सूबेदार मेजर सत्य नारायण सांभरिया निमोठ व भूदेव रंगा भी उपस्थित थे। महिलाओं ने शिवानी यादव को फूल मालाएं पहनाकर व शाल भेंट कर स्वागत किया। शिवानी यादव के पिता जितेन्द्र यादव सीआरपीएफ की 83वीं बटालियन आरएएफ में एएसआई के पद पर कार्यरत हैं। मुख्य अतिथि अमित कुमार यादव ने कहा कि शिवानी ने सब-लेफ्टिनेंट के पद पर चयनित होकर नाम रोशन किया है। इस अवसर पर बोड़याि कमालपुर से डा. बलवान सिंह, सरपंच सत्य नारायण, राजकुमार बेरली खुर्द आदि मौजूद रहे।

आकांक्षी खंड नाहड़ ने नार्थ जोन में पाया दूसरा स्थान : एसडीएम

- नीति आयोग ने प्रगति पथ के लिए निर्धारित किए 39 पैरामीटर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कोसली

कोसली उपमंडल के आकांक्षी खंड नाहड़ को भारत सरकार के नीति आयोग ने उत्तर भारत जोन में दूसरे तथा समस्त भारत के आकांक्षी खंडों में 12वें स्थान पर घोषित किया है। कोसली के एसडीएम विजय कुमार यादव ने बताया कि भारत में 484 और उत्तर भारत में 84 खंडों को आकांक्षी घोषित किया गया है। इनको प्रगति के पथ पर आगे ले जाने के लिए नीति आयोग की ओर से 39 पैरामीटर निर्धारित किए गए हैं। इन पैरामीटर्स में यह शामिल है कि एक आकांक्षी खंड में किस प्रकार की शिक्षा सुविधाएं, लड़कियों और छोटे बच्चों की सेहत होनी चाहिए। कृषि क्षेत्र में किसानों की सुविधाओं के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। सभी पैरामीटर का मूल्यांकन करने के बाद नाहड़ खंड को उत्तरी जोन में द्वितीय घोषित किया गया है। हरियाणा के नूंह खंड को नार्थ जोन में प्रथम घोषित किया गया है। एसडीएम ने बताया कि डीसी अभिषेक मीणा व एडीसी राहुल मोदी के नेतृत्व में आकांक्षी खंड नाहड़ को विकास की मुख्य धारा में लाने के लिए काफी काम किया गया। पिछले दिनों नीति आयोग की अधिकारी ने भी नाहड़ का दौरा किया था।

रेवती फाउंडेशन ने दूसरी वर्षगांठ पर किया पौधरोपण व पक्षियों के लिए पानी का प्रबंध

- कार्यक्रम में देखने को मिला कला, पर्यावरण संरक्षण का संगम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेवाड़ी। पक्षियों के लिए पानी के सकोरे रखते हुए।

शहर की प्रसिद्ध नृत्य एवं संगीत संस्था रेवती फाउंडेशन की ओर से शनिवार को दूसरी वर्षगांठ पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कला, पर्यावरण संरक्षण और जीव-दया का सुंदर संगम देखने को मिला। संस्था के संस्थापक एवं निदेशक भगवान सिंह और योगेश निखरी ने बताया कि पिछले दो वर्षों में सैकड़ों बच्चों ने संस्था से नृत्य और संगीत की बारीकियां सीखकर अपनी प्रतिभा को निखारा है। वर्षगांठ को यादगार बनाने के लिए अकादमी के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने परिसर में छायादार एवं फलदार पौधे लगाए। इसके साथ ही भीषण गर्मी को देखते हुए पक्षियों के लिए विभिन्न स्थानों पर पानी के सकोरे भी रखे गए। उन्होंने कहा कि कला व्यक्ति को संवेदनशील बनाती है और संस्था का उद्देश्य समाज के प्रति जिम्मेदार और संवेदनशील इंसान बनाना भी है। इस अवसर पर विवेक यादव, प्राशी शर्मा, ध्रुव दत्त, आकाश रोहिल्ला, शालिनी अंजू आदि रहे।

संत निरंकारी सत्संग भवन में हुआ इंग्लिश मीडियम समागम

ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति से ही इंसान को होती है समानता की समझः लूथरा

कार्यक्रम में पलवल, रेवाड़ी, झज्जर, होडल और महेंद्रगढ़ की संगत हुई शामिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेवाड़ी। निरंकारी सत्संग भवन में लोगों को उपदेश देते नरेश लूथरा। फोटो : हरिभूमि

शनिवार को संत निरंकारी मिशन के इंग्लिश मीडियम समागम के जरिए निरंकारी भक्तों ने मानवता और एकत्व का संदेश दिया। शहर के धारूहेड़ा चौक स्थित निरंकारी सत्संग भवन में आयोजित पलवल जोन के समागम में पलवल-रेवाड़ी सहित महेंद्रगढ़, झज्जर, नारनौल, होडल, तावडू, नूंह और आसपास की संगतें शामिल हुईं। निरंकारी सतगुरु माता सुदीक्षा महाराज के आशीर्वाद से संपन्न हुए समागम में मिशन के युवाओं ने अंग्रेजी भाषा के माध्यम से विचार, कविताएं और भक्ति गीत प्रस्तुत किए। उन्होंने मिशन के सिद्धांतों, मानवता, प्रेम, और ब्रह्मज्ञान को रचनात्मक रूप से साझा किया। युवाओं ने संदेश दिया कि सतगुरु के ज्ञान के बिना मानव जीवन अधूरा है और ब्रह्मज्ञान ही जीवन को सार्थक बनाता है। युवा गीतकारों, कवियों और वक्ताओं ने अंग्रेजी भाषा के माध्यम से सतगुरु और निराकार परमात्मा की महिमा का गुणगान किया। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि भाषा कोई भी हो, यदि भाव सच्चे हों तो संदेश सीधे हृदय तक पहुंचता है।

संत निरंकारी विश्व को देता है भाईचारे का संदेश

समागम में दिल्ली से आए केंद्रीय प्रचारक संत नरेश लूथरा ने कहा कि ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के बाद ही इंसान सच्चे अर्थों में एकत्व और समानता को समझ पाता है। उन्होंने कहा कि निरंकारी मिशन की यही मुख्य विचारधारा है एक को जानों, एक को मानों और एक हो जाओ। एक को जानने के बाद जात-पात, रंग-भाषा और अन्य भेद-भाव की दीवारें खुद-ब-खुद टूट जाती हैं। उन्होंने संपूर्ण अवतार वाणी के शब्द का सहारा लेकर ब्रह्म ज्ञान की महिमा का बखान किया। उन्होंने फरमाया कि अवतार वाणी के शब्द ज्ञान गुरु दा इंसाना नू रब दा घर दिखलांदा ए, ज्ञान गुरु दा इंसाना नू मुक्ति मार्ग पांदा ए के माध्यम से शहंशाह बाबा अवतार सिंह महाराज ने साफ-साफ कहा है कि गुरु का ज्ञान ही परमात्मा से नाता जोड़कर जीवन को रोशन करता है। उन्होंने कहा कि निरंकारी मिशन सभी धर्मों और भाषाओं का समान सम्मान करता है तथा विश्व भाईचारे का संदेश देता है।

रेवाड़ी। यात्रा में शामिल रेवाड़ी के कार्यकर्ता। फोटो : हरिभूमि

कांग्रेस पार्टी सदैव भाईचारे व सामाजिक सौहार्द की मजबूती पर करती है कार्यः लवली

रेवाड़ी। अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की कोऑर्डिनेटर दीपिका लवली यादव ने शनिवार को रोहतक में आयोजित सद्भाव यात्रा कार्यक्रम में समर्थकों के साथ शामिल हुई। इस मौके पर दीपिका यादव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी हमेशा भाईचारे, सामाजिक सौहार्द और लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने का कार्य करती रही है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने और जनता के मुद्दों को प्रमुखता से उठाने का आह्वान किया। इस अवसर पर चौधरी बृजेंद्र सिंह ने कार्यकर्ताओं से एकजुट होकर पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद थे।

जनस्वास्थ्य विभाग ने यूनिट के चार बोरवेल किए सील

सीएम फ्लाइंग की जींस धोने वाली यूनिट में रेड

जोहड़ में छोड़ा जा रहा था केमिकल युक्त पानी

जांच में यूनिट बिना अनुमति के चलती पाई गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी/कोसली

सीएम फ्लाइंग ने कोसली क्षेत्र में जींस धोने की यूनिट में छापामार कार्रवाई की। निरीक्षण के दौरान यूनिट बिना एनओसी के चलती हुई मिली। जांच के दौरान यूनिट का केमिकल युक्त पानी गांव के जोहड़ में छोड़ा जा रहा था। सीएम फ्लाइंग ने यूनिट संचालक को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। सीएम फ्लाइंग को सूचना मिली थी कि कोसली में नियमों का उल्लघंन कर कपड़ों की धुलाई और रंगाई का काम किया जाता है। सूचना के टीम ने दो फैक्ट्रियों में रेड की, जिसमें विभिन्न विभागों के कर्मचारियों को शामिल किया गया। निरीक्षण के दौरान बिजली के लोड सहित अन्य दस्तावेजों में भी खामियां पाई गई।

रेवाड़ी। कोसली में कार्रवाई करते हुए सीएम फ्लाइंग टीम तथा कोसली में लगी यूनिट में चलती मशीनें। फोटो : हरिभूमि

सीएम फ्लाइंग इंचार्ज दीनदयाल ने कहा कि नियमों का उल्घंन बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

शुक्रवार देर रात सीएम फ्लाइंग ने जींस धोने की यूनिट की ओर से जल प्रदूषण फैलाए जाने की शिकायत पर विभागों के अधिकारियों को साथ गुड़ियानी रोड स्थित यूनिट का औचक निरीक्षण किया। टीम में मुख्यमंत्री उड़नदस्ता के निरीक्षक दीनदयाल, प्रदूषण विभाग के एसडीओ अजय यादव, बिजली निगम के एसडीओ जतिन कुमार, सिंचाई विभाग के एसडीओ संजीव कुमार, डीटीपी विभाग के जेई मोहित यादव, जनस्वास्थ्य विभाग के एसडीओ विनोद बागड़ी व उप अग्निशमन अधिकारी संजय कुमार शामिल थे। सीएम फ्लाइंग की रेड के समय बिहार के सीतामढ़ी जिले के हिरोली गांव निवासी अमित की ओर से किराए की जगह पर चलाई जा रही फैक्ट्री में बिहार के मधुबनी जिले के बैरवा गांव निवासी विनय मौजूद मिला। यूनिट में 15 श्रमिक मशीनों पर काम करते हुए मिले।

प्रदूषण विभाग की सीटीई व सीटीओ नहीं मिली

टीम के अनुसार यूनिट में काफी मात्रा में जींस धुली हुई तथा सुखाई हुई पाई गई, लेकिन संचालक के पास प्रदूषण विभाग की सीटीई व सीटीओ नहीं मिली। निरीक्षण में पाया कि यूनिट की ओर से जींस धोने के बाद छोड़ा गया केमिकल युक्त पानी नाली के माध्यम से गांव के जोहड़ में छोड़ा जा रहा है। विभाग ने यूनिट के चार बोरवेल को मौके पर सील कर दिया। जनस्वास्थ्य विभाग की जांच में यूनिट में दो पानी के कनेक्शन मिले, जिनका कोई रिकार्ड नहीं मिला।

रिपोर्ट के आधार पर होगी आगामी कार्रवाई

डीटीपी विभाग की जांच में यूनिट बिना अनुमति चलती पाई गई। सीएम फ्लाइंग टीम के निरीक्षक ने बताया कि यूनिट में पाई गई अनियमित्ताओं को लेकर विभागों की रिपोर्ट के आधार पर आगामी कार्रवाई की जाएगी।

समाज का प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी समझेः डीसी

- डीसी अभिषेक मीणा ने किसान भवन परिसर में किया पौधरोपण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

शनिवार को डीसी अभिषेक मीणा ने नई अनाज मंडी स्थित किसान भवन परिसर में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर डीसी ने लोगों से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनके पेड़ बनने तक देखभाल करने का आह्वान भी किया। कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण संरक्षण और हरियाली बढ़ाने को लेकर विशेष चर्चा की गई। डीसी ने किसान यूनियन की ओर से किसानों और मजदूरों के हित में किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी समझनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पौधरोपण केवल एक अभियान नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए आवश्यक कदम है। कार्यक्रम में किसान यूनियन के प्रधान समय सिंह, सरोज यादव, उप प्रधान चरण सिंह, मुन्नी तथा वेद प्रकाश सुल्तानिया सहित यूनियन के सभी सदस्य मौजूद थे। किसान यूनियन के पदाधिकारियों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए चलाए जा रहे अभियानों की जानकारी भी साझा की। इस अनेक गणमान्य जन मौजूद थे।

रेवाड़ी। किसान भवन में पौधरोपण करते डीसी।

बस की टक्कर से खच्चर गाड़ी चालक घायल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

कोसली गांव में सड़क दुर्घटना में खच्चर गाड़ी से खेत में खाद लेकर जा रहा व्यक्ति घायल हो गया। कोसली गांव निवासी श्योराम ने कोसली थाने में दुर्घटना करने वाले बस चालक के विरुद्ध मामला दर्ज कराया है। श्योराम ने बताया कि शुक्रवार प्रातः वह तथा छोटा भाई राजेन्द्र सिंह अपनी-अपनी खच्चर गाडी से खेत में खाद भर कर जा रहे थे।

उनकी खच्चर गाड़ियां सड़क किनारे खड़ी थी कि अचानक पीछे से आ रही बस के चालक भाकली निवासी हरीश ने बस से खच्चर गाड़ियों को टक्कर मार दी, जिससे उनके भाई राजेन्द्र व दोनों खच्चरों को काफी चोटें आई। उन्होंने भाई को कोसली उपमंडल अस्पताल में दाखिल कराया। पुलिस ने आरोपी बस चालक के विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया है।

गवर्नमेंट स्कूल नंदरामपुर बास के मेरिट पाने वाले 57 विद्यार्थी हुए सम्मानित

धारूहेड़ा। शहीद नरेश कुमार राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नंदरामपुर बास के कक्षा दसवीं व बारहवीं के 57 छात्रों ने मेरिट सूची में स्थान पाया है। शनिवार को स्कूल में आयोजित समारोह में बारहवीं के 37 तथा 10वीं के 20 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। बारहवीं विज्ञान संकाय के 29 बच्चों में से 22 ने मेरिट हासिल की है तथा शेष बच्चों ने 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। विज्ञान संकाय की छात्रा मनीषा ने 94.2 प्रतिशत अंक लेकर स्कूल में प्रथम, कला संकाय की सोनम ने 93.6 प्रतिशत अंक लेकर द्वितीय और विज्ञान संकाय की छात्रा चारू ने 92 प्रतिशत अंक लेकर तृतीय स्थान हासिल किया, वही दसवीं कक्षा में वंशिका ने 95.2 प्रतिशत अंक प्राप्त करके पहला, सामेश ने 90 प्रतिशत अंक लेकर दूसरा तथा पायल व विपिन ने 89.6 प्रतिशत अंक के साथ तीसरा स्थान प्राप्त किया। सरपंच प्रतिनिधि गौरव मीणा, रणधीर सिंह पंच, एसएमसी प्रधान व उपप्रधान, समाजसेवी श्रीराम, अश्विनी, किशोरीलाल, रामौतार शनि मंदिर कमेटी के सदस्य व सुरेश कुमार ने प्राचार्य व शिक्षकों के साथ मेधावी विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। श्याम सिंह जेबीटी अध्यापक ने कार्यक्रम में योगदान दिया। स्कूल के प्राचार्य अजय सिंह यादव ने सभी का धन्यवाद करते हुए विद्यार्थियों को निरंतर आने बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

नागरिक अस्पताल में खड़ी इलेक्ट्रिक स्कूटी में लगी आग, बड़ा हादसा टला

रेवाड़ी। शनिवार को नागरिक अस्पताल परिसर स्थित एम्बुलेंस कार्यालय के बाहर खड़ी एक इलेक्ट्रिक स्कूटी में अचानक आग लग गई। कुछ ही देर में स्कूटी से धुआं और तेज लपटें निकलने लगी। एंबुलेंस कर्मचारियों ने तुरंत कार्यालय में लगे अग्निशमक यंत्रों की मदद से आग बुझाना शुरू किया। कुछ ढी देर में आग पर काबू पा लिया गया, लेकिन तब तक स्कूटी काफी हद तक जल चुकी थी। समय रहते आग पर काबू पाने से बड़ा हादसा टल गया। आग भड़कने से स्कूटी की बैट्री में ब्लास्ट हो सकता था। क्योंकि इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर की बैट्री ब्लास्ट होने की घटनाएं लगातार सामने आ रही है। प्रत्यक्षदर्शियों ने कहा कि इलेक्ट्रिक वाहन पर्यावरण संरक्षण के लिहाज से बेहतर विकल्प है, लेकिन सुरक्षा संबंधी घटनाएं सामने आने से उपभोक्ताओं का भरोसा डगमगाने लगा है। विशेषज्ञों का कहना है कि बैटरी की गुणवत्ता, ओवरहीटिंग, चार्जिंग में लापरवाही और तकनीकी खामियां इस तरह की घटनाओं का कारण बन सकती हैं।

आईआईटी में 98.29 परसेंटाइल प्राप्त करने वाली ज्योति हुई सम्मानित

कोसली। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रतनथल में शनिवार को आईआईटी की लिखित परीक्षा में 98.29 परसेंटाइल प्राप्त करने वाली विद्यालय की छात्रा ज्योति को सम्मानित किया गया। प्राचार्य अशोक कुमार ने बताया कि छात्रा ज्योति ने हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की मैट्रिक परीक्षा में 98.4 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे तथा हरियाणा सरकार की योजना के अंतर्गत सुपर हंड्रेड में कुरुक्षेत्र पढ़ाई की तथा अब आईआईटी की लिखित परीक्षा में 98.29 परसेंटाइल प्राप्त किए हैं। उन्होंने बताया कि ज्योति आईआईटी एडवांस की परीक्षा भी दे चुकी है। इस मौके पर विद्यालय की दो अन्य छात्राओं स्वीटी चौहान और प्रिया चौहान को विज्ञान प्रदर्शनी में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सविता देवी, पहलाद सिंह, डा. विष्णु, वरिष्ठ प्रवक्ता किरणपाल यादव, प्रवक्ता दिनेश भारद्वाज, संजय मल्हन, नीरू शर्मा, रुचि चौहान, अजीत सिंह, अमित कुमार, महेंद्र सिंह, बलराम यादव, चंद्रशेखर, टीकाराम, राजेंद्र कुमार, दीपक कुमार, पूजा, अश्विनी यादव, रामपाल चौहान, सोहनलाल, रीना यादव, प्रीति, विपिन कुमार, महेश कुमार, जवाहरलाल, राहुल कुमार, सरस्वती स्कूल के मुख्य शिक्षक नरेश कुमार और हंस देवी उपस्थित थे।

न्यूज डायरी

इच्छापूर्ण चोलेवाले हनुमान मंदिर में सुंदरकांड पाठ व भंडारा 26 को

रेवाड़ी। सोलहराही सेक्टर-1 स्थित प्राचीन इच्छापूर्ण चोले वाले हनुमान मंदिर में 26 मई मंगलवार को 34वें सुंदरकांड पाठ, भंडारा व भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा। मंदिर के पुजारी बिजेन्द्र भारद्वाज मेहंदीपुर बालाजी धाम वाले ने बताया कि सुंदरकांड पाठ शाम 5 बजे शुरू होगा तथा 7:30 बजे से भंडारे का प्रसाद वितरित किया जाएगा। कार्यक्रम में भजन गायक गोपाल वर्मा और बॉबी राजा सोनी मनमोहक भजनों के माध्यम से बाबा की महिमा का गुणगान करेंगे। मंदिर के संस्थापक भूपेन्द्र गुप्ता ने बताया कि प्राचीन इच्छापूर्ण चोले वाले हनुमान मंदिर में भक्तों के सहयोग से प्रति माह सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया जाता है। उन्होंने ज्यादा से ज्यादा श्रद्धालुओं से कार्यक्रम में शामिल होने का आह्वान किया है।

विद्यार्थियों ने ग्रीष्मकालीन शिविर की गतिविधियों में सीखे अनेक कौशल

रेवाड़ी। दिल्ली रोड पुलिस लाइन स्थित डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल में कौशल बोध ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में विद्यार्थियों ने कौशल बोध से जुड़ी विविध गतिविधियों में भाग लिया। विद्यार्थियों को फायरलेस कुकिंग, संगीत, नृत्य, योग, एरोबिक्स, नुक्कड़ नाटक, कला एवं शिल्प, टाई एंड डाई, ब्लॉक प्रिंटिंग और माटी कला का प्रशिक्षण दिया गया। गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों ने नए कौशल सीखे और अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। शिविर का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना और उन्हें व्यावहारिक ज्ञान से जोड़ना था। विद्यालय प्रबंधन ने कहा कि इस तरह के आयोजन से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और टीम भावना का विकास होता है।

पतंजलि परिवार का सहयोग शिक्षक सम्मान समारोह आज

रेवाड़ी। शनिवार को पतंजलि योग समिति एवं भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के कार्यकर्ताओं की ऑनलाइन बैठक हुई। बैठक में संगठन की ओर से 24 मई को सुबह 10 बजे हरिओम कानोड़ गेट पर सहयोग शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी एमपी गोयल करेंगे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक लक्ष्मण सिंह यादव तथा अति विशिष्ट अतिथि ईश कुमार आर्य अध्यक्ष भारत स्वाभिमान ट्रस्ट, विनीता पीपल नगर परिषद चेयरपर्सन, विशिष्ट अतिथि शीशराम यादव व डा.आर बी यादव होंगे। रामनिवास बेनीवाल पूर्व जिला प्रभारी भारत स्वाभिमान ट्रस्ट व दयानंद आर्य जिला प्रभारी भारत स्वाभिमान ट्रस्ट ने बताया कि कार्यक्रम में 61 सहयोग योग शिक्षकों को सम्मानित किया जाएगा।

रोहिंग्या व बांग्लादेशियों की पहचान के लिए चलाया सर्च अभियान

कोसली। शनिवार को थाना कोसली क्षेत्र में कोसली थाने व सीआईए की संयुक्त टीम ने रोहिंग्या व बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान के लिए सर्च अभियान चलाया। अभियान के दौरान रेलवे स्टेशन, सालावास रोड, कान्हड़वास रोड व हुडा कॉलोनी में स्थित झुग्गी-झोपड़ियां व ईंट-भट्ठों सहित अन्य स्थानों पर अवैध तरीके से रहने वाले संदिग्ध लोगों की जांच की गई। इस दौरान पुलिस टीम ने बाहरी श्रमिकों की भी जानकारी ली तथा उनके पहचान पत्र व वाहनों के कागजातों की जांच की। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि जिले किसी को भी अनाधिकृत रूप से रहने की छूट नहीं है। जिला पुलिस बाहरी लोगों की पहचान के लिए विशेष अभियान चला रही है। सुरक्षा कह दृष्टि से जिले में बाहर से आकर रह रहे लोगों की पहचान होना अत्यंत आवश्यक है। एसपी ने थाना प्रबंधकों को अपने-अपने क्षेत्र में अप्रवासी रोहिंग्या व बांग्लादेशी नागरिकों की पहचान करके उनको वापस भेजने की प्रक्रिया अमल में लाने के निर्देश दिए। एसपी ने जिला वासियों से अपील करते हुए कहा कि सभी अपने पास काम करने वाले या किराए पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की पुलिस वेरिफिकेशन जरूर करा लें। अगर भविष्य में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं करता तो उसके खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

नशे के दुष्प्रभावों से अवगत करवाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

पुलिस की नशा मुक्ति टीम जिला को नशामुक्त बनाने में प्रयास में जुटी है। शनिवार को पुलिस टीम ने गांव पातुहेड़ा व मंगलेश्वर में ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराया। इस अवसर पर एसआई जितेन्द्र कुमार ने कहा कि नशा व्यक्ति के शरीर, परिवार और समाज तीनों का सबसे बड़ा शत्रु है। यह न केवल स्वास्थ्य को बर्बाद करता है, बल्कि युवाओं का भविष्य भी अंधकारमय कर देता है।

विद्यार्थियों को नशे जैसी बुरी आदतों से दूर रहकर शिक्षा व खेलों में ध्यान लगाना चाहिए। उन्होंने ग्रामीणों से अभियान से जुड़ने का आह्वान किया।

पुलिस टीम ने ग्रामीणों को साइबर अपराधों से बचाव के भी टिप्स दिए। उन्होंने बताया कि ग्रामीण ओटीपी व पासवर्ड सहित अपनी गोपनीय जानकारी किसी के साथ साझा न करें। साइबर ठगी होने पर साइबर राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल करें। उन्होंने ग्रामीणों को यातायात नियमों की भी जानकारी दी तथा वाहन चलाते समय हेलमेट, सीट बेल्ट का प्रयोग और यातायात संकेतों का पालन करने की अपील की।

बाइक चोरी मामले में दूसरा आरोपी काबू

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

सेक्टर-3 चौकी पुलिस ने बाइक चोरी करने के मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपी की पहचान गांव भैरू का बास निवासी दीपक उर्फ दीपू के रूप में हुई है। पुलिस इस मामले में एक आरोपी हेमंत को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की गई दो बाइक भी बरामद की है। जिला सीकर के गांव कारजो निवासी नीरज कुमार ने

पुलिस में शिकायत दी थी कि उसने 22 अप्रैल को आईसीआईसीआई बैंक के बाहर मोटरसाइकिल खड़ी की थी। जब उसने दोपहर को देखा तो वहां से बाइक गायब थी। काफी तलाश करने के बाद उसने पुलिस को शिकायत दी। पुलिस ने एक आरोपी हेमंत को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। पूछताछ में आरोपी दीपक ने बताया कि उसने हेमंत व नवीन से चोरी की बाइक खरीदी थी। पुलिस ने आरोपी दीपक को भी गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने शनिवार को आरोपी को न्यायालय में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 8291554800

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

आईक्यूएसी प्रकोष्ठ के निदेशक प्रोफेसर विकास बत्रा ने सभी का स्वागत किया

आईजीयू के शिक्षकों को एमओओसी कोर्स व ऑनलाइन कंटेंट डेवलपमेंट पर दिया प्रशिक्षण

- कार्यशाला दो चरणों में आयोजित की गई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मीरपुर

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय में आंतरिक गुणवत्ता एवं प्रत्यायन प्रकोष्ठ की ओर से शिक्षकों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में शिक्षकों को विभिन्न ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेस के बारे में अवगत कराया गया और साथ ही मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सेज प्लेटफार्म पर कोर्स विकसित करने और विद्यार्थियों को जोड़ने का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला में कुआलालम्पुर यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी मलेशिया से प्रोफेसर रमेश चंद्र शर्मा ने शिक्षकों को प्रशिक्षित किया। कार्यशाला दो चरणों में आयोजित की गई। प्रथम चरण में ओपन ऑनलाइन रिसोर्सेज के बारे में बताया गया, जिसमें अलग-अलग वेबसाइट तथा अपना स्वयं का कोर्स विकसित करने के लिए आवश्यक शिक्षण सामग्री की उपलब्धता के संबंध में अवगत कराया गया और दूसरे चरण में मुख्य फोकस अपना स्वयं का कोर्स विकसित करने की आवश्यकता एवं उसकी प्रक्रिया के संबंध में था। विवि के कुलसचिव प्रोफेसर दिलबाग सिंह ने आज के समय में ऑनलाइन कोर्स की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। आईक्यूएसी प्रकोष्ठ के निदेशक प्रोफेसर विकास बत्रा ने सभी का स्वागत किया। अधिष्ठाता शैक्षणिक मामले प्रोफेसर सुनील कुमार ने विभिन्न ऑनलाइन कोर्स विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यशाला में संयोजक डा. रीना हुड्डा, भौतिकी विभाग से डा. कविता, अर्थशास्त्र विभाग से डा. रितु, वाणिज्य विभाग से डा. प्रियंका रंगा एवं इतिहास विभाग से डा. बीरेंद्र सिंह का योगदान रहा।

रेवाड़ी। कार्यशाला में जानकारी देते हुए वक्ता। फोटो : हरिभूमि

अत्यंत उपयोगी साबित होगी कार्यशाला

कुलपति प्रोफेसर असीम मिगलानी ने कहा कि आज के समय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा भी एमओओसी कोर्स को बढ़ावा दिया जा रहा है। नैक की तैयारियों में इसको अलग से महत्व दिया जाता है, ऐसे में इस प्रकार की कार्यशाला अत्यंत उपयोगी साबित होगी।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 24 मई 2026

जीवन की दिशा बदल देगा
जापानी मेनीफेस्टेशन

जापानी संस्कृति अपनी विशिष्ट जीवनशैली और अनूठे दर्शन के लिए पूरी दुनिया में जानी जाती है। यहां पर मेनीफेस्टेशन को केवल इच्छा पूर्ति का साधन ही नहीं, बल्कि अनुशासन, कृतज्ञता और ब्रह्मांड के साथ तालमेल बिठाने की एक कला भी माना जाता है। इसमें कई ऐसी कारगर तकनीकें अपनाई जाती हैं, जो आपके जीवन को पूरी तरह सकारात्मक दिशा में मोड़ देती हैं। इनमें से कुछ तकनीकों के बारे में जानिए।

{ कवर स्टोरी / शिखर चंद जैन }

एक मशहूर जापानी कहावत है- 'सात बार गिरो, आठ बार उठो।' इससे ही साबित होता है कि जापानी संस्कृति और जीवनशैली में कितनी सकारात्मकता शामिल है। जापानी जीवनशैली और दर्शन में जीवन की धारा बदलने के लिए मेनीफेस्टेशन के नायाब और बेहतरीन तरीके मौजूद हैं। जापानी मेनीफेस्टेशन को इच्छा पूर्ति का साधन मात्र नहीं माना जाता है। यह जीवन में संतुलन बनाने और तालमेल बिठाने की एक कला सिखाता है। जापानी मेनीफेस्टेशन तकनीकें हमें सिखाती हैं कि सपने देखना केवल पहला कदम है। उन सपनों को अनुशासन, कृतज्ञता और धैर्य के साथ सींचना ही असली कला है। कह सकते हैं कि मेनीफेस्टेशन का असली जादू, हार न मानने वाले जज्बे में छिपा होता है।

क्या है जापानी मेनीफेस्टेशन

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर व्यक्ति अपने सपनों को साकार करना चाहता है। उसके लिए हर संभव प्रयास करता है। पश्चिमी देशों में 'लॉ ऑफ अट्रैक्शन' की चर्चा जोरों पर है। लेकिन इसके विपरीत पूर्व में, विशेषकर जापान में, इच्छा पूर्ति के लिए सदियों पुराने ऐसे तरीके मौजूद हैं, जो न केवल प्रभावी हैं बल्कि व्यक्ति के चरित्र निर्माण में भी मदद करते हैं। जापानी मेनीफेस्टेशन तकनीकें केवल सोचने पर नहीं, बल्कि हमारे प्रयास करने और सपने साकार होने के गहरे संतुलन पर आधारित होती हैं। यहां जापानी मेनीफेस्टेशन से जुड़ी कुछ पद्धतियों के बारे में बता रहे हैं।

योशुकु करें सफलता का पूर्वाभास

यह एक प्राचीन जापानी तकनीक है, जिसे प्री सेलिब्रेशन के रूप में जाना जाता है। इसका मूल सिद्धांत यह है कि आप अपनी सफलता की खुशी पहले ही मना लें, ताकि उसे हकीकत में बदला जा सके। जापानी संस्कृति में यह माना जाता है कि 'भविष्य को वर्तमान में जीना' सफलता को आकर्षित करता है। यह उस भावना को पूरी तरह महसूस करने के बारे में है, जो आपको लक्ष्य प्राप्त करने के बाद होगी। इसमें कहा जाता है कि सबसे पहले स्पष्ट करें कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं? इसके बाद इमेजिन करें कि वह सफलता आपको प्राप्त हो चुकी है। इसे रियल फील करने के लिए अपने दोस्तों या परिवार के सदस्यों और रिश्तेदारों के साथ एक छोटी-सी पार्टी करें, दूसरों की 'बधाई' स्वीकार करें। आंखें बंद करें और इमेजिन करें कि आप क्या पहन रहे हैं, कौन आपके पास है और आप कैसा महसूस कर रहे हैं? फिर ब्रह्मांड को 'धन्यवाद' कहें जैसे कि काम पहले ही पूरा हो चुका है। या फिर अपनी डायरी में आज की तारीख डालें और लिखें, 'आज मैंने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया और मुझे बहुत खुशी हो रही है।' योशुकु दिमाग की प्रोग्रामिंग को प्रभावित करता है। यह आपके अवचेतन मन को सफलता के लिए ट्यून करता है। जब आप पहले ही 'जीत' महसूस करते हैं, तो असफलता का डर खत्म हो जाता है।

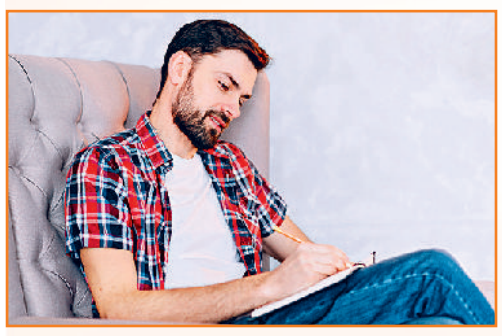

अरिगातो व्यक्त करते रहें कृतज्ञता

जापानी संस्कृति में 'कृतज्ञता' को सबसे बड़ी ऊर्जा माना गया है। 'अरिगातो' यानी धन्यवाद शब्द में जापानी लोग जादू मानते हैं। इस दर्शन के तहत मेनीफेस्टेशन की खास एक तकनीक है-'पैसों को धन्यवाद देना'। जब आप पैसे खर्च करते हैं, तो मन ही मन उसे 'अरिगातो' कहें ताकि वह समाज में खुशी फैलाए। जब पैसे आएं, तब भी 'अरिगातो' कहें। यह सकारात्मक ऊर्जा का एक चक्र बनाता है, जो प्रचुरता को आकर्षित करता है। आप स्वयं को संपन्न मानकर ज्यादा आत्मविश्वास के साथ काम करते हैं।

कइजन हर दिन सीखें नई तकनीक

मेनीफेस्टेशन केवल कल्पना करना नहीं होता है। कइजन तकनीक कहती है कि हर दिन केवल 1 प्रतिशत सुधार करें। अगर आप अमीर बनना चाहते हैं, तो हर दिन धन प्रबंधन के बारे में एक छोटी-सी ही सही कोई उपयोगी बात या तरीका सीखें। यह निरंतरता आपके अवचेतन मन को विश्वास दिलाती है कि आप बदल रहे हैं, और यही विश्वास हकीकत को बदल देता है।

कहने का सार है कि जापानी जीवनशैली और संस्कृति, मेनीफेस्टेशन के जरिए जीवन की धारा सकारात्मक दिशा में मोड़ने के लिए प्रेरित करती है। *

दारुमा गुड़िया संकल्प की दिलाए याद

दारुमा गुड़िया जापान की सबसे प्रसिद्ध मेनीफेस्टेशन तकनीकों में से एक है। यह लाल रंग की गोल गुड़िया होती है, जिसकी आंखें खाली यानी सफेद होती हैं। जब आप कोई बड़ा लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तो दारुमा की बाईं आंख को काले रंग से भरते हुए अपनी इच्छा दोहराएं। अब इस गुड़िया को घर के किसी ऐसे कोने में रखें, जहां आपकी नजर बार-बार पड़े। जब वह लक्ष्य पूरा हो जाए, तब इसकी दूसरी (दाईं) आंख को काले रंग से भरें। यह तकनीक हमें लगातार हमारे संकल्प की याद दिलाती रहती है।

एमा ब्रह्मांड को अपनी इच्छा सौंपने की तकनीक

एमा एक तरह की प्रार्थना पट्टिकाएं होती हैं। जापानी मंदिरों (शिंतो मंदिरों) में लकड़ी की पट्टिकाएं लगी होती हैं, जिन्हें एमा कहा जाता है। लोग इन पर अपनी इच्छाएं लिखकर मंदिर में टांग देते हैं। यह आत्मसमर्पण की प्रक्रिया है। अपनी इच्छा को लिखकर ब्रह्मांड (या ईश्वर) को सौंप देना तनाव को खत्म करता है और आत्मविश्वास बढ़ाता है। जिससे मेनीफेस्टेशन की गति बढ़ जाती है।

इस बात में कोई दो राय नहीं है कि हमारी वर्तमान पहचान, हमारे अतीत पर टिकी होती है। यह इस बात पर निर्भर करती है कि हम अपनी स्मृतियों से कितना जुड़े हैं, उसे कितना मान देते हैं। आज तकनीक हमें अपने अतीत, रिश्तों और संवेदनाओं से निरंतर दूर कर रही है। ऐसे में स्मृतियों को संजोने का संकट खड़ा हो गया है।

स्मृतियां ही संजोती हैं यादें-रिश्ते-विरासत

{ जीवनशैली / लोकमित्र गौतम }

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में जहां लोग भविष्य की दौड़ में लगातार आगे बढ़ रहे हैं, वहीं पीछे छूटती स्मृतियां हमें बार-बार यह याद दिलाती हैं कि बिना जड़ों के कोई भी वृक्ष लंबे समय तक हरा-भरा नहीं रह सकता। बचपन की शरारतें, बुजुर्गों की सीखें, संघर्षों की कहानियां, देश के इतिहास की गौरव गाथाएं और अपनों के साथ बिताए छोटे-छोटे पल, ये वो धरोहरें हैं, जो इंसान को अंदर से संपन्न बनाती हैं। वास्तव में स्मृतियां ही हर सभ्य समाज की सांस्कृतिक और भावनात्मक पूंजी होती हैं। जिस समाज की अपनी स्मृतियां जीवित रहती हैं, उसकी संवेदनाएं भी जीवित रहती हैं।

तस्वीरों से नहीं रहा भावनात्मक जुड़ाव: आज का डिजिटल युग स्मृतियों को एक अजीब से मोड़ पर ले आया है। हमारे हाथ में मौजूद मोबाइल फोन में एक ही समय पर लाखों तस्वीरें मौजूद होती हैं। जबकि पिछली सदी के श्याम-श्वेत जमाने में लोग कुछ फोटोज को हमेशा अपने सीने से लगाए रहते, उससे जुड़ी यादों के सहारे कभी हंस तो कभी रो लिया करते थे। एक दौर था, जब हमारे पास कई सारी तस्वीरें होना बहुत बड़ी खुशी देने वाली बात होती थी। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब शायद ही कोई व्यक्ति हो, जिसके मोबाइल में अपनी और अपनों की बेशुमार तस्वीरें न हों। लेकिन शायद ही उन तस्वीरों से कोई भावनात्मक जुड़ाव महसूस होता हो, जैसे पहले होता था। तस्वीरों को लेकर स्मृतियों का गायब होना या तस्वीरों को लेकर हमारे दिलोदिमाग में कोई खास पल, कोई खास मौका याद न आना, इस बात का सबूत है कि अब तस्वीरें हमारे जेहन में अपनी वैसी जगह नहीं बनातीं, जैसे पहले बनाया करती थीं।

स्मृतियां बनाती हैं संवेदनशील: स्मृतियां व्यक्ति को एक संवेदनशील नागरिक बनाने में भी महत्ती भूमिका निभाती हैं। बचपन के दिन, गांव की गलियां, मां के साथ जुड़ी अनगिनत स्मृतियां, दादा-दादी की कहानियां, शिक्षकों की सीखें और ऐतिहासिक घटनाओं के एहसास से बनी स्मृतियां वाकई यही सब चीजें होती हैं, जो हमें एक बेहद संवेदनशील मनुष्य बनाती हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी स्मृतियों से कट जाता है, तो वह अपने मूल से अपने जीवन के सबसे गहन हिस्से से कट जाता है। इसलिए राष्ट्रीय स्मृति दिवस हमें अपनी जड़ों से और अपने मूल से जुड़ने की प्रेरणा देता है।

स्मृतियों की सांस्कृतिक महत्ता: जब हम अपनी उपलब्धियों और संघर्षों को याद करते हैं, तब हम केवल इतिहास से नहीं गुजर रहे होते हैं, बल्कि अपने वर्तमान को भी मजबूत बना रहे होते हैं। हमारे अपने देश भारत में तो स्मृतियों का और भी गहरा महत्व है, क्योंकि हमारी समृद्ध विरासत लिखित होने से ज्यादा मौखिक है। लोककथाएं, लोकगीत, रामायण, महाभारत की कथाएं, गांवों और खेड़ों की दास्तानें, हमारे यहां पीढ़ी दर पीढ़ी ये स्मृतियां अगली पीढ़ियों को मिलती रहती हैं। यही कारण है कि भारतीय समाज में स्मरण को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व तक दिया गया है।

प्रदान करती हैं भावनात्मक शक्ति: आज के समय में स्मृतियों का एक और महत्व है, क्योंकि आज हम उन्हें मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी देखते हैं। सकारात्मक यादें, हर इंसान को भावनात्मक शक्ति देती हैं। परिवार के साथ बिताए गए मधुर क्षण, मित्रों की संगति या किसी प्रेरणादायक घटना की स्मृति, हमारे कठिन समय का सहारा होती है, क्योंकि उसमें सामाजिक जुड़ाव और भावनात्मक संतुलन की मजबूती होती है। हालांकि हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि स्मृतियों का संबंध केवल सुखद अनुभव और यादों से ही नहीं होता है। इतिहास की त्रासदियां भी इंसान के सामूहिक स्मृति का हिस्सा होती हैं। युद्ध, महामारी, विभाजन या प्राकृतिक आपदाएं, मुनष्य को न केवल गहरे तक झकझोरती हैं बल्कि लंबे समय के लिए एक टीस हो जाती हैं। फिर इन्हें याद रखना इसलिए जरूरी होता है ताकि हम भविष्य में ऐसी गलतियों को न दोहराएं।

इसलिए जरूरी है अपनी स्मृतियों से जुड़ाव: अपनी स्मृतियों से जुड़ाव बनाए रखना इस दृष्टि से नई पीढ़ी के लिए विशेष रूप से प्रभावी है, क्योंकि बच्चों और युवाओं में अपने परिवार और समाज के प्रति जो संवेदनशीलता और सामाजिक जुड़ाव का भाव आता है, वह इन स्मृतियों का ही नतीजा होता है। दादा-दादी की जीवन यात्राएं, पुराने संघर्षों की कहानियां और पारिवारिक परंपराएं, युवा पीढ़ी को जीवन के गहरे अर्थ समझाने में मदद करती हैं। लेकिन राष्ट्रीय स्मृति दिवस हमें यह भी सिखाता है कि आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाना भी बहुत जरूरी है। तकनीक का इस्तेमाल स्मृतियों को सहेजने के लिए तो किया जा सकता है, लेकिन अगर इसी तकनीक की चकाचौंध के गुलाम बने रहे, तो स्मृतियों को बनने का मौका नहीं मिलता।

तकनीक का हो संतुलित इस्तेमाल: आज की युवा पीढ़ी की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह अपने दिन का बहुत बड़ा समय, अपने मोबाइल फोन के साथ अकेले में गुजारते हैं। स्मृतियों पर यह बहुत बड़ा हमला है। जब हम अपने दिन का ज्यादातर खाली समय मोबाइल फोन को दे देंगे, तो भला हमारी याद रह जाने वाली स्मृतियां कब बनेंगी, किससे बनेंगी? इसलिए स्मृतियों के संबंध में तकनीक का अंधाधुंध इस्तेमाल थोड़ा फायदा लेकिन बहुत ज्यादा नुकसान भी देता है। क्योंकि भावनाओं का स्थान कभी तकनीक नहीं ले सकती। इसलिए हमें ध्यान रखना चाहिए कि तकनीक हमारे जीवन में इतनी अधिक हावी न हो जाए कि जो हमसे हमारी स्मृतियों को ही दूर करने लगे। *

{ दोहे / डॉ. शरद नारायण खरे }

दिन बरसाता आग

सूरज आतिश बन गया, तपे नगर सब गांव।
जीवों में अकुलाहटें, ढूंढ़ रहे सब छांव।।
लू चलती है गति लिए, बिलख रहा इंसान।
सब नदियों से छिन गई, अब बस सारी आन।।
चाबुक सड़कों पर चले, आतंकित हर एक।
दिनकर के तो आजकल, नहीं इरादे नेक।।
कूलर, पंखे हंस रहे, शीतलता का मान।
मटके ने इस पल 'शरद', पाया नवल विहान।।
किरणें ना किरणें लगें, बरस रही है आग।
बचना तुम चाहे अगर, तो लो बचकर भाग।।
कंबल अब बेकार हैं, बिरथा ऊनी वस्त्र।
किरणें हमले कर रहीं, बनकर नित ही शस्त्र।।
नीर सरीखा बह रहा, तन से बेहद स्वेद।

इस मौसम में हो रहा, हर इक जन को खेद।।
बिजली लगती है सुखद, जिससे झरती शीत।
हम तुम, सब ही कष्ट में, सुन लो मेरे मीत।।
सुबह हमें लगती भली, दिन बरसाता आग।
फिर जी-भर फुंफकारता, आतप का तो नाग।।
नीर गिरे आकाश से, देखे मानव राह।
पर अब इस पल जग रही, हर दिल से ही आह।।

{ व्यंग्य / डॉ. मुकेश असीमित }

सड़क का दर्शनशास्त्र

सड़क का भी एक दर्शन होता है, खासकर उस सड़क का, जो खुद सड़कछाप हो। वह सड़क जो कहीं टिककर नहीं रहती, हर मोहल्ले, हर मोड़, हर चुनावी वादे में आवारगी करती मिल जाती है। आजकल ऐसी सड़कें खूब चलन में हैं। चलन में इसलिए कि चलने लायक कम और दिखने लायक ज्यादा होती हैं।

सड़क साम्यवाद का जीवंत, धूल-धूसरित उदाहरण है। यहां गधे और घोड़े एक ही ताल में चलते हैं। कभी-कभी तो पहचान ही गड़बड़ा जाती है कि कौन-सा किस श्रेणी में है। पशु, पक्षी, मानव सबको सड़क समान भाव से अपनाती है। सड़क सबकी मां है। अब अगर मां की गोद में बैठकर कोई पूछे कि गधे-घोड़े का फर्क क्यों नहीं दिख रहा, तो इसमें मां का क्या दोष! सड़क तो बस बनी है आओ, चलो, दौड़ो, गिरो, रौंदो, जो लिखा लाए हो, वही होगा। आप सड़क पर हैं या सड़क पर लाए गए हैं, यह नियति का मामला है, सड़क का नहीं।

सड़क और संसद का रिश्ता भी बड़ा दार्शनिक है। आदमी कब सड़क से संसद पहुंच जाए और कब संसद से सड़क पर लौट आए, कहा नहीं जा सकता। जनता सड़क के रास्ते ही नेताओं को संसद का पता देती है और उसी रास्ते से वापसी का न्योता भी। इसलिए सड़क है तो संभावनाएं हैं धरने की, हड़ताल की, रैली की, जाम की और कभी-कभी नंगे नाच की भी। सड़क लोकतंत्र की खुली प्रयोगशाला है।

सड़क है तो गड्ढे हैं। गड्ढे हैं तो मरम्मत है। मरम्मत है तो बजट है। बजट है तो फाइलें हैं। फाइलें हैं तो अफसर का चूल्हा जलता है। सड़क सरकार का बहुउद्देशीय औजार है। शौचालय, पेशाबघर और कचरा निस्तारण की कई योजनाओं से बचा लेती है। लोग सड़क पर ही अभ्यास कर लेते हैं, और सड़क 'राइट एट योर डोरस्टेप' कचरा सेवा दे देती है बिना टेंडर, बिना उद्घाटन।

कोरोना के दिनों में जब सड़कें सूनी हुईं, तो उन्हें भी बुरा लगा। पर जल्दी ही फैक्ट्री मालिकों ने मजदूरों को निकाला और सड़कें फिर गुलजार हो गईं। मजदूरों के रेलों ने सड़कों को धन्य कर दिया, मां की गोद फिर भर गई।

सड़कें हैं तो एक्सीडेंट हैं। ट्रैफिक पुलिस का डंडा अभियान निरंतर है। चालान से जेबें भी फुल टॉस फूल रही हैं। सड़कें हैं तो फुटपाथ हैं, और फुटपाथ हैं तो उन पर सोते लोग। वरना नशे में धुत्त रईसों को कुचलने के लिए लोग मिलेंगे कहां? सड़कें ही तो हैं जो रील और सेल्फी प्रेमियों की कर्मभूमि हैं, जहां जोखिम जितना बड़ा, व्यू उतने ज्यादा।

सड़कें हैं तो सड़कछाप गुंडे भी हैं। राजनीति की प्रारंभिक पाठशाला यही है। रेहड़ियों से शुरू हुई हफ्तावसूली आगे चलकर बड़े घोटालों का पाठ्यक्रम बनती है। सड़क कैडर तैयार करती है, छुटभैये से गैंगस्टर तक।

आजकल सड़कों पर ध्यान कम है। ध्यान दें भी तो कैसे, सड़कें बड़ी बेवफा हैं। बनाई नहीं कि उखड़ने को तैयार। इतना भी सब्र नहीं कि एक चुनावी कार्यकाल पूरा हो जाए। मरम्मत का बजट पास होते-होते नेता बदल जाता है और क्रेडिट कोई और ले जाता है। समाधान सरल है हर नेता अपने नाम की सड़क बनवाए। चुनाव हार जाए तो सड़क उठाकर घर ले जाए।

सड़कें मां जैसी ही होती हैं। पान की पीक, कचरा, मल-मूत्र सब समेट लेती हैं, बिना शिकायत। अब प्रश्न उठता है मां तो सड़क है, बाप कौन? जब भी सड़क पर वाहन चालकों के बीच बहस या हाथापाई की नौबत आती है तो पहला सवाल यही पूछा जाता है, 'सड़क तेरे बाप की है क्या?' पर बाप का पता आज तक नहीं चला। मिलते ही इसकी सूचना दी जाएगी।

कभी-कभी सड़कें उधड़ती हैं ताकि शहर को ग्रामीण जीवन की झलक मिल सके कंक्रीट, धूल, मिट्टी, जमीन से जुड़े रहने का प्रशिक्षण। चिकनी सड़क पर खेलेंगे तो बच्चों की इम्युनिटी कैसे बनेगी?

सड़कें पतित-पावनी भी हैं, मोक्षदायिनी भी। प्राचीन योगियों की परंपरा आज सड़कें निभा रही हैं। कहीं दुर्गम, कहीं अदृश्य, कहीं कीचड़, कहीं खाई। हैं भी, नहीं भी-ब्रह्मस्वरूप। फाइलों में हैं, वादों में हैं, पर चलने में अकसर नहीं। न शुरुआत दिखती है, न अंत। कोई पूछे, 'यह सड़क कहां जाती है?' भाग्यशाली हैं वे जिनकी जाती है। यहां तो सालों से देख रहे हैं नजर ही नहीं आती।

सड़कें वही हैं जहां चाहो मोड़ लो, बिना शिकायत। और अगर सरकारी बजट की हों, तो नेता जी उन्हें अपने बंगले तक भी ले जा सकते हैं। सड़कछाप सड़क बस महसूस करने की चीज है। मानने की, जानने की नहीं। *

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

सामाजिक बदलाव की कहानियां

वरिष्ठ कथाकार कैलाश बनवासी का आठवां कथा संग्रह 'हवा बहुत तेज है' हाल में प्रकाशित होकर आया है। इसमें संकलित ग्यारह कहानियों में मध्य वर्गीय जीवनशैली के विभिन्न स्तरों में हाल के वर्षों में हुए बाहरी ही नहीं आंतरिक बदलावों की भी सूक्ष्म पड़ताल की गई है। शीर्षक कहानी 'हवा बहुत तेज है' के मुख्य पात्र जगन्नाथ बाबू अपने आस-पास के बदलावों, सामाजिक बहुरूपिएपन, नई पीढ़ी की सोच के बीच विस्मित नजर आते हैं तो अभूतपूर्व छल के समय में सामान्य सी ईमानदारी भी कितनी असामान्य लगती है, इसे 'एक पुराना आदमी' कहानी में प्रकट किया गया है। बाजारवाद के प्रभाव को 'दाग अच्छे हैं' कहानी में व्यक्त किया गया है। संग्रह की सभी कहानियां ठहरकर विचार करने को बाध्य करती हैं। *

पुस्तक: हवा बहुत तेज है (कहानी संग्रह), लेखक: कैलाश बनवासी,
मूल्य: 299 रुपए, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

{ लघुकथा / डॉ. यशोधरा भटनागर }

गूंज

दरवाजा खुलते ही रात का अंधियारा मंगलू के साथ घर में घुस आया था। कच्चे-पक्के घर में चूल्हे के गहरे स्लेटी धुएं में लालटेन की रोशनी अपना प्रकाश फैलाने के लिए जूझ रही थी।

'छुटका.. ऐ छुटका! ऐ कमली..! कितै को मर गए रे सब कै सब?' लड़खड़ाते कदमों से घर में घुसते हुए मंगलू चीखते हुए बोला।

एक तीखी गंध पूरे घर में पसर गई।

आठ बरस का दीपू कमरे की कच्ची दीवार से चिपका सहमा हुआ उसे देख रहा था।

मंगलू ने जेब से आधी भरी बोतल निकाली और जोर से चिल्लाया, 'का देख रया है बे! दौड़ कै एक गिल्लास लाओ हमाए लाने।'

कुछ पल बाद दीपू स्टील का गिलास मंगलू के हाथ में थमाते हुए बोला, 'बापू, आज स्कूल में टीचर ने पूछो हतो कि हम बड़े होकर का बनेहैं?'

मंगलू ने उसको चपतियाते हुए पूछा, 'तुमने का कहौ फिर?' दीपू थोड़ी देर चुप खड़ा रहा फिर अपनी पूरी हिम्मत बटोर कर बोला, 'बापू हमने कह दओ कि हम बड़े होकर तुमाओ जैसा नहीं बनहैं।'

'टन्न...!'

टन्न की यह जोरों की गूंज, घर की कच्ची दीवारों में समा गई।

दरअसल, मंगलू ने गिलास सामने रखे खाली कनस्तर पर दे मारा था।

मंगलू ने गुस्से से दीपू की ओर देखा, बेटे की आंखें आईने की तरह साफ थीं। इन आंखों में उसे खुद का विकृत चेहरा साफ नजर आ रहा था। *

परंपरा-संस्कृति का मोहक आयोजन
तमिलनाडु का येरकौड उत्सव

दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु अपनी संस्कृति, परंपरा और लोकपर्वों के लिए मशहूर है। राज्य पर्यटन विभाग द्वारा हर वर्ष आयोजित होने वाला येरकौड उत्सव भी इन्हीं सांस्कृतिक आयोजनों में से एक है। यहां पर्यटक विभिन्न तरह के अनुभवों का आनंद ले सकते हैं। इस उत्सव की खासियतों पर एक नजर।

{ सांस्कृतिक उत्सव
धीरज बसाक }

दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु के सलेम जिले में स्थित एक प्रसिद्ध हिल स्टेशन है-येरकौड। समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह हिल स्टेशन, शेवरॉय पहाड़ियों पर बसा है, जहां कॉफी, मसालों, फूलों और फलों की शानदार और सघन खेती होती है। धुंध से ढंकी पहाड़ियों व झीलों के लिए मशहूर पर्वतीय नगर येरकौड सिर्फ अपनी प्राकृतिक सुंदरता और फल-फूलों की खेती के लिए ही नहीं जाना जाता बल्कि यह जनजातीय संस्कृति, लोकनृत्य, पारंपरिक संगीत और स्थानीय हस्तशिल्प का भी गढ़ है। ये सब खूबियां मिलकर इस क्षेत्र को सांस्कृतिक रूप से बेहद समृद्ध बनाती हैं। यहां की इन्हीं खूबियों को देश-दुनिया के सामने लाने के लिए हर साल येरकौड उत्सव मनाया जाता है। आमतौर पर मई महीने के अंतिम सप्ताह में मनाया जाने वाला यह रंगीन-सांस्कृतिक उत्सव इस साल 22 मई से शुरू हो चुका है और 28 मई 2026 तक आयोजित होगा।

सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यमः इस उत्सव की शुरुआत तमिलनाडु पर्यटन विभाग और स्थानीय प्रशासन ने मुख्यतः दो उद्देश्यों से की थी। पहला येरकौड की सांस्कृतिक पहचान और स्थानीय परंपराओं को बढ़ावा देने के लिए तथा दूसरा, पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए। धीरे-धीरे यह आयोजन केवल पर्यटकों को लुभाने वाला उत्सव ही नहीं रहा बल्कि स्थानीय लोगों की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का प्रमुख मंच बन गया। आज इस उत्सव से जुड़कर सैकड़ों कलाकारों, किसानों, जनजातीय समुदायों, हस्तशिल्पियों, लोकनर्तकों और संगीतकारों की भी न केवल पहचान बनी है बल्कि यह उनकी समृद्धि का जरिया भी बना है। सिर्फ येरकौड की स्थानीय संस्कृति ही नहीं, तमिलनाडु की सांस्कृतिक पहचान को चमकदार बनाने में भी येरकौड उत्सव ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। येरकौड का सांस्कृतिक उत्सव शेवरॉय पहाड़ियों में रहने वाली जनजातियों की सांस्कृतिक आत्मा है।

लोकनृत्यों का भी होता है आयोजन

उनके लोकनृत्य, उनकी पारंपरिक वेशभूषा, उनका स्थानीय लोकसंगीत, रीति-रिवाज, इस उत्सव के न केवल आकर्षण हैं बल्कि उन्होंने तमिलनाडु और दुनिया के दूसरे हिस्सों को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। यही कारण है कि दक्षिण भारत में बड़े पैमाने पर लोग इस मौके पर यहां आकर अपनी रोजमर्रा की भाग-दौड़ भरी जिंदगी के बीच आह्लादित करते सुकून के पल महसूस करते हैं।

परंपरा-आधुनिकता का संगमः उत्सव के दौरान यहां के स्थानीय कलाकार अपनी लोक-लुभावन वेशभूषाओं में जुलूस निकालते हैं तथा तमिल लोक-जीवन की शानदार झांकी प्रस्तुत करते हैं। यह उत्सव एक साथ न केवल यहां की सांस्कृतिक उत्सवधर्मिता को प्रस्तुत करता है बल्कि आधुनिक जीवनशैली और पारंपरिक लोक संस्कृति का एक लुभावना फ्यूजन भी प्रदर्शित करता है। इसलिए येरकौड उत्सव को स्थानीय संस्कृति के संरक्षण का महत्वपूर्ण जरिया माना जाता है, क्योंकि यह नई पीढ़ी को जितनी उत्सुकता और रोमांच के साथ आकर्षित करता है, उतनी ही तीव्रता के साथ पुरानी पीढ़ी को भी इस उत्सव के साथ जोड़ता है।

मनमोहक उत्सव की अनोखी छटाः तमिल लोकसंगीत, नादस्वरम, करगट्टम और कवड़ी की पारंपरिक धुनों तथा स्थानीय नृत्य प्रस्तुतियों से यह उत्सव अलौकिक अनुभूति प्रदान करता है। शाम ढलते ही पूरा शहर लोकधुनों और अलग-अलग जगहों पर हो रहे सांस्कृतिक कार्यक्रमों से जीवंत हो उठता है। इस उत्सव में हिस्सा लेने आए सैलानी संतरे का स्वाद तथा फूलों की खुशबू का खूब लुत्फ उठाते हैं। लौटते वक्त विशेष रूप से यहां की मशहूर कॉफी और कालीमिर्च जैसे मसाले अपने साथ ले जाना नहीं भूलते हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्णः येरकौड महोत्सव सिर्फ स्थानीय लोक संस्कृति का उत्सव भर नहीं है बल्कि जीवनशैली और जीवन यापन का भी संगीतमय उत्सव है। इस उत्सव में स्थानीय फलों और कृषि उत्पादों की विशेष झांकियां लगाई जाती हैं, जिससे आने वाले पर्यटकों को शुद्ध और विशिष्ट कृषि उत्पाद तो हासिल होते ही हैं, यहां के किसानों की अच्छी-खासी आय भी इस उत्सव के जरिए हो जाती है। यहां का हस्तशिल्प भी अपनी तरह की विशिष्टता के लिए जाना जाता है। विशेषकर यहां के बांस के उत्पादों को लोग खूब पसंद करते हैं। कुल मिलाकर यह प्रकृति, स्थानीय संस्कृति और सामुदायिक जीवन का साझा उत्सव है। इसमें फूलों की खुशबू के साथ लोकधुनें गूंजती हैं और पहाड़ों की ठंडी हवाओं के साथ परंपराओं की गर्माहट का आनंद भी मिलता है। *

फ्लावर शो-बोट रेसिंग का आकर्षण

येरकौड लोक उत्सव की दो और महत्वपूर्ण खासियतें हैं, जिसमें एक है फ्लावर शो और दूसरा है नौका दौड़। येरकौड उत्सव इन दोनों आयोजनों के लिए विशेष तौर पर जाना जाता है। फ्लावर शो के दौरान यहां पाए जाने वाले सैकड़ों किस्म के खुशबूदार और रंग-बिरंगे फूलों की कलात्मक सजावट पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। इस उत्सव के दौरान येरकौड झील में एक बोट रेस भी आयोजित की जाती है, जो इस उत्सव का एक विशेष आकर्षण होती है। दूर-दूर से आए पर्यटक उत्सव के दौरान नौकायन का भरपूर आनंद लेते हैं।

इस तपिश में पक्षियों को देगा राहत
थोड़ा सा दाना-थोड़ा सा पानी

इन दिनों की तपती गर्मी से हम सब इंसान ही नहीं नन्हे बेजुबान पक्षी भी बेहद बेचैन हैं। दिन के समय इनके लिए दाने-पानी को खोजना बहुत कठिन हो जाता है। इन पक्षियों की बेचैनी को कम करने के लिए हम सब उनके लिए थोड़े से दाने और पानी का इंतजाम कर उनको बड़ी राहत दे सकते हैं।

{ सरोकार / के. पी. सिंह }

तपती दोपहरी में जब धरती अंगारों की तरह दहकती है और आसमान से आग बरसती महसूस होती है, तब सबसे ज्यादा संकट, उन नन्हे परिंदों पर आता है, जिनकी चहचाहट हमारी सुबहों को जीवंत बनाती है। पानी की कुछ बूंदें और अनाज के कुछ दाने उनके लिए जीवनदायी बन सकते हैं। इसलिए अगर हम सब इन बेचैन करने वाली गर्मी के दिनों में अपने घर की छत, बालकनी या खिड़की के बाहर बने स्पेस पर एक कटोरा पानी का भरकर रख दें और उसी जगह एक मुट्ठी दाना डाल दें तो यह नन्हे परिंदों को जिंदगी की बहुत राहत देगा। यह छोटा-सा प्रयास उनके लिए सुरक्षित ठिकाना और जिंदगी का सहारा बन सकता है।

बढ़ते ताप से पक्षी होते बेहालः बीते कुछ दिनों से गर्मी का प्रकोप लगातार बढ़ रहा है। इसके चलते हम इंसानों से भी ज्यादा शहरों की सड़कों से लेकर गांव के खुले आकाश तक पक्षियों के लिए भारी संकट पैदा हो गया है। देखने में आ रहा है कि पिछले कुछ सालों से गर्मी के दिनों में तापमान में लगातार हो रही वृद्धि, पक्षियों के प्राकृतिक जीवन चक्र को बाधित कर रहा है। पहले जहां 38 से 40 डिग्री का तापमान मई के आखिरी दिनों में हुआ करता था, वहीं अब यह अप्रैल के अंतिम सप्ताह से लेकर मई के पहले सप्ताह में होने लगा है। इन दिनों तो कई जिलों में तापमान 45 डिग्री सेंटीग्रेड को भी पार कर रहा है। जब गर्मी इतनी ज्यादा पड़ती है तो छोटे पक्षियों के लिए यह बहुत चुनौती बन जाती है। उनके लिए सुरक्षित आश्रय और दाना-पानी की जबर्दस्त किल्लत हो जाती है। पक्षियों का शरीर छोटा और बेहद संवेदनशील होता है, इससे वे तापमान में हल्के बदलाव से भी प्रभावित होते हैं। गर्मियों में जब जलस्रोत सूखने लगते हैं, तो उन्हें पानी की तलाश में दूर-दूर तक उड़ान भरनी पड़ती है। इस दौरान उनकी ऊर्जा तेजी से खत्म होती है और कई बार पानी की तलाश में ही वो हीट स्ट्रोक का शिकार हो जाते हैं।

शहरी क्षेत्रों में बड़ी समस्याः शहरी क्षेत्रों में गर्मी की स्थिति और गंभीर है। कंक्रीट के जंगलों में न तो पेड़ों की छाया बची है और न ही प्राकृतिक जलस्रोत। यही कारण है कि कबूतर, गौरैया, कौआ, मैना जैसे पक्षी भी अब पानी के लिए तरसने लगे हैं। कई रिपोर्ट्स में यह सामने आया है कि हर साल गर्मियों में उत्तर भारत से दक्षिण भारत तक हजारों पक्षी सिर्फ प्यास और अत्यधिक गर्मी के कारण दम तोड़ देते हैं। तेजी से हो रहे शहरीकरण के कारण लगातार पेड़ कट रहे हैं। ये पेड़ केवल ऑक्सीजन ही नहीं देते बल्कि पक्षियों के लिए भोजन और आशियाना भी होते हैं। पुराने पेड़ जिनमें पक्षी पहले घोंसले बनाया करते थे, अब नहीं लगाए जा रहे हैं। सड़कों के किनारे अब इमारती लकड़ी वाले पेड़ लगाए जाते हैं, जिसका असर यह होता है कि सड़क किनारे पेड़ होने के बावजूद उसमें पक्षी अपना घोंसला नहीं बना पाते और न ही राहगीरों को उनसे कोई छाया मिलती है। यही कारण है कि शहरों में रहने वाली गौरैया और बुलबुल जैसी पक्षियों की हाल के सालों में काफी ज्यादा संख्या कम हुई है, क्योंकि पानी और आश्रय की कमी से इंसानों की तरह पक्षी भी लू का शिकार हो जाते हैं।

कर सकते हैं ये प्रयासः अत्यधिक गर्मी में नन्हे पक्षियों का शरीर, तापमान नियंत्रित नहीं कर पाता, जिससे वे गिरकर बेहोश हो जाते हैं। इसलिए अपनी जिम्मेदारी समझते हुए हम सबको गर्मियों में अपने घरों, अपने आंगनों, खेतों, छतों और मुडेरों यानी जहां भी संभव हो, एक कटोरा पानी और एक मुट्ठी दाने का इंतजाम पक्षियों के लिए जरूर करना चाहिए। इससे इनकी जान भी बचाई जा सकती है और हमें इससे नन्हे पक्षियों की जान बचाने की खुशी भी भरपूर मिलेगी। इससे कई तरह के तनाव और लाइफस्टाइल समस्याओं से हम मुक्त रहेंगे। सरकार और पर्यावरण संगठन इस संबंध में हालांकि कई तरह के प्रयास कर रहे हैं। पक्षी बचाओ जैसे अभियान लोगों को जागरूक कर रहे हैं। लेकिन यह सिर्फ सरकार और मुट्ठी भर गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासों से नहीं होगा। जैसे ही गर्मियों में पारा 40 डिग्री के पार पहुंचता है, शहरी क्षेत्रों में 70 फीसदी जलस्रोत सूख जाते हैं। इसीलिए पिछले कई सालों से हर साल विशेषकर मई से लेकर जून तक देशभर में हजारों पक्षी हीट स्ट्रोक या लू से मरते पाए गए हैं। ऐसे में हम अगर अपने घर के आस-पास या कहीं भी मिट्टी के एक बर्तन में हर रोज थोड़ा पानी भरकर रख दें और उसी के आस-पास ज्वार, बाजरा और चावल जैसे कुछ दाने भी डाल दें, तो इस छोटे से प्रयास से हर साल हजारों पक्षियों की जान बचाई जा सकती है। *

गर्मी में देंगे ठंडा एहसास
ये देसी कोल्ड ड्रिंक

देश के विभिन्न हिस्सों में गर्मी से राहत पाने के लिए अलग-अलग तरह के ड्रिंक्स पीने-पिलाने का चलन है। ये देसी कोल्ड-ड्रिंक्स, टेस्टी ही नहीं हेल्दी भी होते हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

{ सीजनल डाइट
शिखर चंद जैन }

अकसर हेल्थ एक्सपर्ट्स कार्बोनेटेड कोल्ड ड्रिंक न पीने की हिदायत देते हैं। लेकिन चिंता न करें, गर्मी और उमस से राहत पाने के लिए कई तरह के देसी ठंडे पेय आप पी सकते हैं, जो न केवल प्यास बुझाते हैं बल्कि शरीर को अंदर से ठंडा रखने में भी मदद करते हैं। दरअसल, बाजार में मिलने वाले कोल्ड ड्रिंक में अत्यधिक शुगर (चीनी), कैफीन और हानिकारक केमिकल होते हैं, जो वजन बढ़ाते हैं और डिहाइड्रेशन का कारण बन सकते हैं। इनके ज्यादा सेवन से हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटीज जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं। इसके विपरीत, प्राकृतिक पोषक तत्वों से भरपूर देसी ड्रिंक्स शरीर को ताजगी देते हैं और इनका शरीर पर कोई दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता।

लस्सी

लस्सीः गर्मी के दिनों में लस्सी तो हम सब के घरों में बनती ही रहती है। इसे बनाने में न कोई झंझट है ना ज्यादा समय ही लगता है। बस अच्छी क्वालिटी के दही में चीनी मिला लें। या फिर भुना-पिसा जीरा और काला नमक मिलाकर पी लीजिए। यह शरीर को तुरंत ठंडक प्रदान करता है।

जलजीराः जीरा, पुदीना, इमली और नीबू रस के मिश्रण से तैयार यह चटपटा पेय पाचन को सुधारता है और शरीर को ठंडा रखता है। आप चाहें तो अच्छी कंपनी का जलजीरा पावडर लाकर उसमें पुदीना, नीबू का रस मिलाकर पी सकते हैं।

आम पन्नाः इन दिनों मार्केट में कैरी (कच्चा आम) भरपूर मिल रही है। कैरी को भून कर मसल लीजिए और छान कर उस पानी में हल्की-सी चीनी, जीरा और काला नमक मिला लीजिए। यह पेय लू से बचाने में रामबाण माना जाता है।

आम पन्ना

ठंडाईः दूध, सूखे मेवे और केसर से भरपूर यह ड्रिंक विशेषकर होली के समय और गर्मियों में ताजगी के लिए पी जाती है। यह शरीर को ठंडक देने के साथ-साथ पौष्टिक भी होता है।

बेल का शरबतः पके हुए बेल के गूदे से बना यह शरबत एक बेहतरीन ठंडा पेय है और पाचन में सहायक होता है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिशा और मध्य प्रदेश में इसका खूब सेवन किया जाता है।

सत्तू शरबतः भुने हुए चने के आटे (सत्तू), नीबू, पानी और नमक से बना यह पेय पौष्टिक होने के साथ-साथ पेट को ठंडा और शरीर को ऊर्जावान रखता है। यह मुख्य रूप से बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में प्रचलित है।

सत्तू शरबत

गोंधोराज घोलः यह पश्चिम बंगाल की खास छाछ है, जिसमें सुगंधित 'गोंधोराज' नामक विशेष तरह के नीबू के रस का उपयोग किया जाता है।

नीरू मज्जिगा (नीर मोर): यह पेय मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और कर्नाटक में पिया जाता है। यह एक ठंडी छाछ है, जिसे मसाले, करी पत्ते और अदरक मिलाकर तैयार किया जाता है।

जिगरठंडाः दूध, गोंद कतीरा और नन्नारी सिरप से बना यह पेय शरीर की गर्मी को कम करने के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। खासतौर से यह तमिलनाडु के मदुरै और उसके आस-पास के इलाकों में अधिक प्रचलित है।

पनाकमः तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में गुड़, सोंठ और इलायची से बना यह पारंपरिक पेय, त्योहारों पर विशेष रूप से बनाया जाता है और गर्मी के मौसम में राहत पाने के लिए उत्तम माना जाता है।

रागी अंबालीः कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में प्रचलित यह पेय पोषण से भरपूर और शरीर को शीतलता देने वाला होता है। यह रागी (एक प्रकार का मोटा अनाज) से बना होता है। *

रागी अंबाली

'इंडियाज बेस्ट डांसर 4' और 'नच बलिए 4' जैसे रियलिटी शोज को जज कर चुकीं करिश्मा कपूर 'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में भी बतौर जज नजर आएंगी। डांसिंग जज के रूप में वह कैसा महसूस करती हैं? इस शो के पांचवें सीजन में इस बार क्या खास है? भविष्य में एक्टिंग को लेकर उनकी क्या प्लानिंग है? ऐसे ही कई सवालों के जवाब दिए करिश्मा कपूर ने इस बातचीत में।

इंडियाज बेस्ट डांसर की जज बनकर मुझे बहुत मजा आ रहा हैः करिश्मा कपूर

{ खास मुलाकात / आरती सक्सेना }

अपने दौर की टॉप एक्ट्रेसेस में शुमार करिश्मा कपूर ने शादी के बाद कुछ समय के लिए अभिनय से संन्यास ले लिया था और वह पूरी तरह घर-परिवार की जिम्मेदारियों में व्यस्त हो गई थीं। लेकिन आज हालात अलग हैं, उनके बच्चे बड़े हो चुके हैं। एक बार फिर वे एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में एक्टिव हो गई हैं। जल्द ही करिश्मा, सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन और सोनी लिव पर प्रसारित होने वाले डांस रियलिटी शो 'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में बतौर जज नजर आएंगी। इस शो और करियर से जुड़े सवाल करिश्मा कपूर से।

आप एक बार फिर 'इंडियाज बेस्ट डांसर' सीजन 5 में बतौर जज आएंगी। इस बार इस शो में आपको किस बात ने आकर्षित किया?

इस बार इस सीजन का थीम 'इंडिया वाला डांस' है। जिसका मतलब है इंडिविजुएलिटी और सेल्फ एक्सप्रेशन, यह अपनी यूनिक शैली को अपनाने, खुद पर कॉन्फिडेंस रखने और एकदम अलग दिखने से ना डरने के बारे में है। कहने का मतलब यह है कि जब प्रतियोगी सच में अपनी कला के जरिए अपनी पहचान से जुड़ते हैं, तभी उनकी परफॉर्मेंस यादगार साबित होती है। 'इंडिया वाला डांस' की इसी सोच से इंप्रेस होकर मैं एक बार फिर इस शो से जुड़ी।

बॉलीवुड के कई सुपरहिट गानों का आप हिस्सा रही हैं। 'दिल तो पागल है' में माधुरी दीक्षित के साथ आईकॉनिक डांस, गोविंदा के साथ कई डांस नंबर्स, आज भी दर्शकों के जेहन में जिंदा हैं। ऐसे में जब इस शो में आपके डांस वाले गानों पर पार्टिसिपेंट्स परफॉर्म करते हैं तो उस समय आपका क्या रिएक्शन होता है?

'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में को-जजेज के साथ करिश्मा कपूर

(मुस्कुराते हुए) पुरानी यादें ताजा हो जाती हैं। बहुत खुशी होती है जब अपने डांस नंबर पर किसी को ठुमके लगाते हुए देखती हूं। मेरी फिल्मी जर्नी में डांस का अहम हिस्सा रहा है। 'इंडियाज बेस्ट डांसर' में मेरे गाने पर किया गया हर परफॉर्मेंस मुझे उन पलों की याद दिलाता है। जब पार्टिसिपेंट्स को मैं पूरी शिद्दत के साथ अपने गानों पर डांस करते हुए देखती हूं तो मुझे बहुत खुशी होती है। उनका हार्ड वर्क और डेडिकेशन इंस्पायरिंग लगता है।

आप फिल्मी बैकग्राउंड से हैं, जहां कहानी कहने में डांस ने अहम भूमिका निभाई है। ऐसे में जजिंग पैनल में आपको डांस का कौन-सा साइड अनोखा लगता है, जिसमें आप प्रतियोगी को जज करती हैं?

मेरी पूरी लाइफ फिल्मों में बीती है। 16 साल की उम्र से मैंने एक्टिंग शुरू कर दी थी। इस दौरान मैंने हमेशा डांस को एक पॉवरफुल आस्पेक्ट के रूप में देखा है। डांस न सिर्फ फीलिंग्स को एक्सप्रेस करता है बल्कि यह कहानी कहने की भी ताकत रखता है। यह शो सिर्फ डांसिंग स्टेप्स के बारे में नहीं है, बल्कि इमोशन एक्सप्रेशन और दर्शकों से जुड़ने के बारे में भी है। मैं यही नजरिया बतौर जज लाना चाहती हूं। मैं ऐसी परफॉर्मेंस देखना चाहती हूं, जो टेक्निकली सही हो, इमोशन से भरपूर और सहज हो। ऐसी परफॉर्मेंस जो दर्शकों के दिलों पर गहरा असर छोड़े।

'इंडियाज बेस्ट डांसर 5' में आपके साथ गीता कपूर, जावेद जाफरी और टेरेंस लुईस भी बतौर जज आ रहे हैं। उनके साथ आपका तालमेल कैसा है?

बहुत ही अच्छा है। शो की जजिंग के अलावा भी हम आपस में मजाक मस्ती करते रहते हैं। गीता जहां मस्तीखोर है, वहीं जावेद जाफरी का सेंस ऑफ ह्यूमर बहुत अच्छा है। इन सभी जजेज के साथ शो का हिस्सा बनने का अनुभव मजेदार है।

'इंडियाज बेस्ट डांसर' देश भर के उभरते कलाकारों के लिए एक अहम प्लेटफॉर्म बन चुका है। ऐसे में जो डांसर इस शो में भाग लेना चाहते हैं, ऐसे कंटेस्टेंट्स को आप क्या मैसेज देना चाहेंगी?

उनसे मैं यही कहना चाहूंगी कि अपने ऊपर विश्वास रखें, खुद के प्रति सच्चे रहें, कुछ ना कुछ नया सीखने की कोशिश करें, चुनौतियों का सामना करें, कभी निराश ना हों और ना ही हार मानें। एक दिन आपकी मेहनत जरूर रंग लाएगी। आपका टैलेंट आपको सब में अलग और अच्छा दिखाएगा। ऐसे लोगों का इस शो में स्वागत है। ये मंच ऐसे ही लोगों के लिए बना है, जहां आकर वह अपना डांसिंग टैलेंट पेश कर सकते हैं।

क्या आपके बच्चों को भी डांस और एक्टिंग में इंटरेस्ट है?

इस बारे में अभी तो मैं कुछ कह नहीं सकती, क्योंकि मेरे दोनों ही बच्चे फिलहाल पढ़ाई कर रहे हैं। भविष्य में वे कौन-सा करियर चुनते हैं, यह अभी से कहना मुश्किल है। *

मैं फिल्मों में भी काम करने के लिए तैयार हूं बशर्ते...

टीवी शोज के अलावा फिल्मों और वेब सीरीज में एक्टिंग को लेकर क्या प्लानिंग है, इस बारे में पूछने पर करिश्मा बताती हैं, 'फिल्म हो, ओटीटी हो या टीवी, मुझे हर जगह काम करने में कोई प्रॉब्लम नहीं है। बस मैं जो भी काम करूं वह अच्छा होना चाहिए। जैसे मैंने कुछ सालों पहले 'मेंटल हुड' और 'मर्डर मुबारक' वेब सीरीज की थी। फिलहाल मैं अभिनव देव के निर्देशन में 'ब्राउन' सीरीज कर रही हूं। फिल्मों में भी काम करने के लिए मैं तैयार हूं बशर्ते उसमें मेरा रोल मीनिंगफुल और दमदार होना चाहिए।'